राहे ईमान

प्राथमिक दीनी मालूमात का संग्रह

लेखक
शेख खुरशीद अहमद साहिब

अनुवादक: सय्यद आमिर अली

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिय्या कादियान

दो शब्द

श्री ख़ुर्शीद अहमद साहिब भूतपूर्व सम्पादक "अलफ़ज़ल" रब्वाह ने छोटी आयु के बालक व बलिकाओं के लिए सरल रूप से इस्लाम तथा अहमदिय्यत पर विश्वास तथा बाद विवाद तथा आवश्यक जानकारी के लिए "राहे ईमान" लिखी है। नज़ारत नश्र-व-इशाअत अहमदिय्या जमाअत के बच्चों व बच्चियों के धार्मिक ज्ञान की बढ़ौतरी के लिए इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रही है।

यह पुस्तक दो भागों में विभाजित की गई है। पहले भाग में इस्लाम के बुनियादी सिद्धान्त, मस्जिद के नियम, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जीवन, अहमदिय्या जमाअत की स्थापना का उद्देश्य, अहमदियत के सिद्धान्त, ख़िलाफ़त के बाबरकत निज़ाम पर आधारित है।

दूसरे भाग में अल्लाह तआला की विशेषताएं, कुछ दुआएं, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चरित्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का व्यवहार तथा अहमदिय्या जमाअत से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी के बारे में बताया गया है। अल्लाह तआला हमारे बच्चों को इस किताब से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक दे - आमीन !

नाज़िर नश्र-व-इशाअत

पहला भाग
पाठ प्रथम
मुसलमान कौन है ?

बच्चो :-

तुम सब अल्लाह तआला की कृपा से मुसलमान हो ! क्या तुमने कभी विचार किया है कि मुसलमान कौन होता है ? मुसलमान वह होता है जो इन पाँच बातों पर विश्वास रखे :-

इस्लाम के पांच सिद्धान्त हैं (अरकाने इस्लाम) । प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है कि वह दिल व जान से इनका पालन करे ।

(1) कलिमा तय्यबा की दिल व जान से गवाही दे.

(2) नमाज़

(3) रोज़ा (व्रत)

(4) ज़कात (दान)

(5) हज

इस्लाम के सिद्धान्तों की व्याख्या

(1) कलमा तय्यबा :- लाइलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदर रसूलुल्लाह।

(2) नमाज़ :- नमाज़ उस महत्वपूर्ण इबादत का नाम है जो प्रतिदिन पाँच बार की जाती है। नमाज़ प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक तथा अनिवार्य है ।

(3) रोज़ा (व्रत) :- प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने में तीस रोज़े (व्रत) रखने अनिवार्य हैं।

(4) ज़कात (दान) :- ज़कात (दान) का अर्थ पवित्रता और बढौतरी है जब किसी मुसलमान के पास कोई धन दौलत एक विशेष मात्रा में

एकत्रित हो जाये तो उसका एक निश्चित किया हुआ भाग चन्दा के रूप में देना पड़ता है यह चन्दा गरीबों तथा लाचारों की सहायता के लिए या दीन के अत्यावश्यक कार्यों के लिए ख़र्च किया जाता है।

(5) हज :- यह एक महत्वपूर्ण इबादत का नाम है जिस में निश्चित दिनों में ख़ाना क़ाबा की (जो मक्का में है) परिक्रमा की जाती है। तथा कुछ निश्चित तथ प्रार्थनाएं की जाती हैं। जो मुसलमान हज पर जाने की शक्ति स्वास्थय तथा तौफ़ीक रखता हो, उस पर ज़िन्दगी में एक बार यह हज करना अनिवार्य है।

ईमान के छ: अरकान हैं :-

(1) अल्लाह तआला पर ईमान लाना।

(2) अल्लाह तआला के फ़रिश्ते सच्चे हैं।

(3) अल्लाह तआला की भेजी हुई सारी पुस्तकें सच्ची हैं।

(4) अल्लाह तआला के सभी नबी सच्चे हैं।

(5) क़यामत का दिन अवश्य आने वाला है।

(6) तक़दीरे ख़ैर और शर पर ईमान लाना आवश्यक है।

संक्षेप व्याख्या

(1) अल्लाह तआला :- अल्लाह तआला के एक होने का अर्थ है कि उसकी कोई समानता करने वाला नहीं। उस जैसा कोई और नहीं वह समस्त विशेषताओं का स्वामी हैं। वह किसी का मोहताज नहीं तथा अन्य सब उसके मोहताज हैं। वह जीवित है तथा सदा जीवित रहेगा। उसने हम सब को जीवन दिया तथा पालन पोषण किया। जब हम इस संसार से सिधारेंगे तो उसी के पास जायेंगे उसी ने हमारे सुधार के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भेजा जो ईश्वर के दूत (पैग़म्बर) तथा अवतार हैं।

(2) फ़रिश्ते :- फ़रिश्ते ख़ुदा की आध्यात्मिक सृष्टि हैं वह परमात्मा की इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं। फ़रिश्ते पापों से पवित्र होते हैं। दो प्रसिद्ध फ़रिश्तों

के नाम ये हैं :-

(1) जिब्राईल (2) मीकाईल

(3) अल्लाह तआला के नबी :- नबी अवतार परमात्मा के वह नेक और सच्चे भक्त होते हैं जो ख़ुदा की ओर से संसार के सुधार के लिए आते हैं ख़ुदा उनकी सहायता करता है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सब नबियों के सरदार हैं तथा ख़ातमुन्नबिय्यीन अर्थात आख़री शरियत लाने वाले नबी हैं। उनके जैसा कोई नबी न आया है तथा न आएगा क़ुर्आन मजीद में लिखे कुछ और प्रसिद्ध नबियों के नाम यह हैं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलम, हज़रत इस्हाक अलैहिस्सलाम, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम।

(4) अल्लाह की भेजी हुई पुस्तकें :- अल्लाह तआला ने हमारी भलाई के लिए पुस्तकें भेजीं यह पुस्तकें ख़ुदा के नबियों पर उतरीं। इन पुस्तकों ने हमें बताया कि वह कौन से कार्य हैं जिनके करने से अल्लाह तआला प्रसन्न होता है तथा वह कौन से कार्य हैं जो ख़ुदा तआला को नाराज़ करते हैं इन सब पुस्तकों पर इमान रखना आवश्यक है शरियत की दो प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम यह हैं।

(1) तौरात (2) क़ुरान शरीफ़

कुरान शरीफ़ सबसे पूर्ण (कामिल) तथा अन्तिम पुस्तक है इसके आने के पश्चात पिछली सभी पुस्तकें रद्ध हो गईं। उनकी सभी विशेषताएं क़ुर्आन शरीफ़ में एकत्रित हैं। क़ुरान मजीद सबसे उच्च तथा उत्तम पुस्तक है। अब इसी का पालन करने से संसार को हिदायत मिल सकती है।

(5) क़यामत का दिन :- जब हमारी मृत्यु हो जाएगी तो हम ख़ुदा की ओर सिधार जाएंगे। एक दिन आएगा कि पर ख़ुदा हमारे प्रत्येक कार्य का बदला देगा। यदि हम ने नेक कर्म किए होंगे तो ख़ुदा हमें पुरस्कार देगा। बुरे कर्म किए

होंगे तो उनकी सज़ा देगा। उसी दिन का नाम क़यामत है।

(6) ख़ैर और शर पर ईमान :- यह कि जो भी हम कर्म करते हैं उसके फलस्वरूप उसका अच्छा या बुरा परिणाम ख़ुदा की ओर से ज़ाहिर होता है।

दूसरा अध्याय
नमाज़

(1) अज़ान :- नमाज़ पढ़ने से पूर्व लोगों को इकट्ठा करने के लिए ऊंची आवाज़ से अज़ान दी जाती है। अज़ान इसलिए दी जाती है ताकि लोगों को यह ज्ञात हो जाए कि नमाज़ का समय हो गया है तथा वह तैयार होकर नमाज़ के लिए मस्जिद में आ जायें।

आज़ान (काबे की ओर खड़े हो कर)

(चार बार) अल्लाहो अकबर (अल्लाह सब से बड़ा है)

(दो बार) अशहदो अल्लाएलाहा इल्लल्लाह (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं)

(दो बार) अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह (मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उस के रसूल हैं)

(दो बार) (दाईं ओर मुख करके) हय्या अलस्सला (नमाज़ की ओर आओ)

(दो बार) (बाईं ओर मुख करके) हय्या अलल्फ़ला (कामयाबी की ओर आओ)

(दो बार) अल्लाहो अकबर (अल्लाह सब से बड़ा है)

(एक बार) लाइलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं)

फ़जर की अज़ान में हय्या अलल्फ़ला कहने के पश्चात दो बार ये कहा जाता है। अस्सलातो ख़ैरुम्मिनन्नौम। अर्थात् :- नमाज़ नींद से अच्छी है।

(2) वुज़ू :- नमाज से पूर्व वुज़ू करना ज़रूरी होता है। वुज़ू के बिना नमाज़ जायज़ नहीं होती।

(3) नमाज़ :- दिन तथा रात में पाँच नमाज़ें अनिवार्य हैं।

(1) फ़जर (2) ज़ोहर (3) असर (4) मग़रिब (5) इशा

रकआतों की गिनती

(1) फ़जर :- दो सुन्नत, दो फ़र्ज़।

(2) ज़ोहर :- चार सुन्नतें, चार फ़र्ज़। इस के पश्चात दो या चार सुन्नतें। पहली चार सुन्नतों के स्थान पर दो सुन्नतें भी पढ़ी जा सकती है।

(3) असर :- चार फ़र्ज़।

(4) मग़रिब :- तीन फ़र्ज़ दो सुन्नतें।

(5) इशा :- चार फ़र्ज़, दो सुन्नतें तथा तीन वितर ज़ोहर मगरिब तथा इशा की नमाज़ के पश्चात दो-दो नफ़िल भी पढ़े जा सकते हैं।

नमाज़ के समय :-

(1) फ़जर :- प्रातः पौ फूटने से लेकर सूर्य निकलने से पूर्व तक।

(2) ज़ोहर :- दोपहर के पश्चात सूरज के ढलने पर।

(3) असर :- तीसरे पहर से लेकर सूर्यास्त होने से पहले पहले।

(4) मग़रिब :- सूर्यास्त होने के पश्चात पढ़ी जाती है।

(5) इशा :- जब सूर्य अच्छी तरह अस्त हो जाए तथा लाली भी समाप्त हो जाए तो इस नमाज़ का समय आरम्भ होता है।

(4) नमाज़ के आवश्यक आदाबः-

(1) जिस समय नमाज़ के लिए खड़े हो तो अपना पूरा ध्यान अल्लाह तआला की ओर रखो तथा यह सोच लो कि तुम अल्लाह तआला के दरबार में खड़े होने लगे हो।

(2) प्रत्येक नमाज़ को उसके ठीक समय पर नियमानुसार पढ़ा करो तथा मस्जिद में जमाअत के साथ पढ़ने का प्रयत्न करो।

(3) नमाज़ में जो कुछ भी पढ़ो ठहर-ठहर कर तथा ध्यानपूर्वक पढ़ो।

(4) नमाज़ पढ़ते हुए आंखें खुली रखो परन्तु उन्हें सिजदा गाह की ओर रखो तथा इधर उधर बिल्कुल मत देखो।

(5) नमाज़ में दीवार का सहारा मत लो तथा न एक पांव पर खड़े होने का प्रयत्न

करो।

(6) नमाज़ के अन्दर अपनी ज़ुबान में अल्लाह तआला के आगे दुआ' करने में कोई बुराई नहीं बल्कि यह अच्छी बात है।

(7) जब तक मस्जिद में नमाज़ की प्रतीक्षा में बैठो अल्लाह तआला को याद करो। मस्जिद में ऊंची आवाज़ में बातें करना तथा शोर मचाना मना है।

(8) रोगी होने की अवस्था में बैठ कर या लेट कर नमाज़ पढ़ो। नमाज़ को छोड़ देना बिल्कुल उचित नहीं।

(9) नमाज़ पढ़ने वालों के सामने से गुज़रना मना है।

(10) यदि नमाज़ हो रही हो तो उसी समय नमाज़ में शामिल हो जाना चाहिए। जितनी रकअतें पढ़ी जा चुकी हों इमाम (नमाज़ पढ़ाने वाला) के सलाम फेरने पर खड़े होकर उनको पूरा करो तथा आरम्भ की सुन्नतें बाद में पढ़ लो।

(11) यदि इमाम रुकू में है तुम पीछे से आकर रुकू में शामिल हो जाओ तो तुम्हारी यह रकअत हो जाएगी।

नमाज़ का प्रारम्भ

(5) नियत बांधने से पूर्व यह प्रार्थना पढ़ो :-

नमाज़ की नीय्यत

नमाज़ पढ़ने वाला काबे की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो जाता है और इन शब्दों में नमाज़ की नीय्यत करता है

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ

इन्नी वज्जहतो वज्हिया

मैं अपना सारा ध्यान उस अल्लाह की ओर करता हूँ

لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ

लिल्लज़ी फ़तरस् समावाते वल अर्ज़ा

जिसने धरती और आकाश को बनाया है

حَنِيۡفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ۔

<u>हनीफ़ौं वमा अना मिनल मुश्रिकीन</u>

मैं झुकने वाला हूँ और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ

इसके बाद 'अल्लाहो अकबर' कह कर दोनों हाथ कानों तक उठा कर सीने पर बाँध लिये जाते हैं।

सना

सीने पर हाथ बांधने के बाद सब से पहले जो दुआ पढ़ी जाती है, उसे 'सना' कहते हैं।

سُبۡحَانَكَ اللّٰهُمَّ

<u>सुब्हाना कल्ला हुम्मा</u>

हे अल्लाह तू पवित्र है

وَبِحَمۡدِكَ وَتَبَارَكَ اسۡمُكَ

<u>वबे हम्देका व तबारा कस्मोका</u>

और तेरी तारीफ़ के साथ और तेरा नाम बरकत वाला है

وَتَعَالٰى جَدُّكَ

<u>वताआला जद्दोका</u>

और तेरी शान बड़ी है

وَلَآ اِلٰهَ غَيۡرُكَ

<u>वला इलाहा ग़ैरोका</u>

और तेरे अतिरिक्त कोई इबादत के लायक नहीं

तअव्वुज़

इसके बाद तअव्वुज़ पढ़ा जाता है अर्थात

اَعُوۡذُ بِاللّٰهِ

आऊ ज़ुबिल्लाहे

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह की

مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

मिनश् शैतानिर् रज़ीम

धिक्कारे हुये शैतान से

सूरत फ़ातिहा

तअव्वुज़ के बाद सूरत फ़ातिहा पढ़ी जाती है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बिस्मिल्ला हिर् रहमा निर्रहीम

मैं अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिना मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

अल्हम्दो लिल्लाहे

सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये ही हैं

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ o

रब्बिल आलमीन

जो सभी लोकों का पालनहार है

اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

अर् रहमा निर् रहीम

जो बिना मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ o

मालिके यौमिद्दीन

क़यामत के दिन का मालिक है

اِيَّاكَ نَعْبُدُ

ईय्याका नाबुदो

हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं

وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○

व ईय्याका नस्तअईन

और हम तुझसे ही मदद मांगते हैं

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○

इहदे नस्सिरातल् मुस्तक़ीम

तू हमें सीधे रास्ते पर चला

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ○

सिरातल् लज़ीना अन अम्ता अलैहिम

उन लोगों के रास्ते पर जिन को तूने पुरुस्कार प्रदान किये

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ

ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम

न कि उन लोगों के मार्ग पर जिन पर तेरा प्रकोप हुआ

وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

वलज़् ज़ाल्लीन

और जो सीधे रास्ते से भटक गये।

اٰمِيْنَ

आमीन

(हे अल्लाह तू यह दुआ) कुबूल कर

सूरत इख़्लास

सूरत फ़ातिहा के बाद क़ुर्आन मजीद की कुछ आयतें या कोई सूरत पढ़ी जाती है , परन्तु कोई विशेष सूरत या आयतें नहीं हैं कुछ भी पढ़ा जा सकता है। यहाँ पर 'सूरत इख़्लास' लिखी जाती है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्ला हिर् रहमा निर रहीम

अल्लाह का नाम लेकर शुरू करता हूँ जो बिना मांगे देने वाला और बार-बार रहम करने वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○

कुल हुवल्ला हो अहद

तू कहदे कि अल्लाह एक और केवल एक है

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ○

अल्ला हुस समद

वह किसी का मुहताज नहीं

لَمْ يَلِدْ ○ وَلَمْ يُوْلَدْ ○

लम यलिद वलम यूलद

न उसने किसी को जना है और न ही उसको किसी ने जना है

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद

उस जैसा और उसके समान कोई दूसरा नहीं

रुकू

यहाँ तक पढ़ने के बाद अल्लाहु अकबर कह कर दोनों हाथ इस प्रकार घुटनों पर रखे जाते हैं कि कमर और टांगें परस्पर समकोण की अवस्था में आ जायें। इसे रुकू कहते हैं। रुकू में कम से कम तीन बार यह दुआ पढ़ी जाती है।

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ ط

सुब्हाना रब्बि यल अज़ीम

मेरा पालन हारा महिमावान अल्लाह बड़ा ही पवित्र है।

इसके बाद यह शब्द कहते हुये हाथ छोड़ कर सीधे खड़े हो जाते हैं।

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ ط

समिअल्ला होलेमन हमेदह

*जो व्यक्ति अल्लाह की '**हम्द**' (स्तुति) करता है उसकी दुआयें सुनी जाता है।*

फिर इसी अवस्था में 'तम्हीद' पढ़ी जाती है अर्थात

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ ط

<u>**रब्बना वलकल हम्द**</u>

*हे हमारे रब्ब तेरे लिये ही हर प्रकार की '**हम्द**' (स्तुतियाँ) हैं*

حَمْدًا كَثِيْرًا

<u>**हम्दन कसीरन**</u>

तेरी हम्द अनन्त है

طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ ط

<u>**तय्येबन मुबारकन फ़ीह**</u>

पवित्र है और बरकतों वाली है

इसके बाद 'अल्ला हु अकबर' कह कर सिज्दे में चले जाते हैं और कम से कम तीन बार इन शब्दों में 'हम्द' की जाती है

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

<u>**सुब्हाना रब्बि यल आला**</u>

मेरा पालन हार अल्लाह बड़ी शान वाला है

इसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुये घुटनों के बल बैठ जाते हैं और निम्नलिखित दुआ पढ़ते हैं-

दो सज्दों के बीच की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ

<u>**अल्लाहुम-मगफ़िरली वर हमनी वहदनी**</u>

हे अल्लाह मेरे अपराध बख़्श दे, और मुझ पर रहम कर और मार्ग दर्शन कर

وَعَافِنِيْ وَاجْبُرْنِيْ

<u>**व आफ़िनी वजबुरनी**</u>

और स्वास्थ प्रदान कर और मेरा सुधार कर

وَارْزُقْنِىْ وَارْفَعْنِىْ ۝

वरज़ुकनी वरफ़अनी

और मुझे आजीविका (रिज़क) प्रदान कर एवं मुझे सम्मान बख़्शा

इसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुये दूसरा सज्दा किया जाता है और पहले की भान्ति ही दुआ की जाती है।

यहाँ तक एक रिकअ़त पूरी हो जाती है। दूसरी रिकअत के लिये अल्लाहु अकबर कह कर पुन: खड़े हो जाते हैं और सभी दुआयें पहले की भान्ति पढ़ी जाती हैं। केवल 'सुब्हाना कल्ला हुम्मा-----' नहीं पढ़ा जाता। इसी प्रकार बाकी रिकअतें भी पढ़ी जाती हैं।

तशहहुद

जब दो रकअत पूरी हो जाती हैं तो घुटनों के बल बैठ कर निम्नलिखित दुआ पढ़ी जाती है।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ

अत तहिय्याते लिल्लाहे

सदा की ज़िंदगी अल्लाह के लिये ही है।

وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ

वस्सलवातो वत तय्येबातो

और प्रत्येक इबादत और दान-पुण्य भी

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ

अस्सलामो अलैका अय्योहन्नबिय्यो

हे नबी (अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आप पर सलामती हो

وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

व रहमतुल्लाहे व-ब-रकातुहू

और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ۝

<u>अस्सलामो अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन</u>

इसी प्रकार हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी अल्लाह की सलामती हो।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

<u>अश्हदो अल्ला इलाहा इल्लल्लाहो</u>

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं

وَ اَشْهَدُ اَنَّ

<u>व अश्हदो अन्ना</u>

और मैं गवाही देता हूँ कि

مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

<u>मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू</u>

हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

दुरूद शरीफ़

यदि केवल दो रिक्अत नमाज़ पढ़नी हो तो इसके बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं।

अर्थात

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

<u>अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन</u>

हे अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर विशेष कृपा कर

وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

<u>व अला आले मुहम्मदिन</u>

और आप की उम्मत पर भी

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

<u>कमा सल्लैता अला इब्राहीमा</u>

जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर कृपा की थी।

وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

<u>व अला आले इब्राहीमा</u>

और आप के मानने वालों पर की थी

إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

इन्नाका हमीदुम् मजीद

निश्चय ही तू बड़ा महिमावान और बड़ी शान वाला है

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्ला हुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन

हे अल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को बरकतें प्रदान कर और आप की उम्मत पर भी

كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ

कमा बारक्ता अला इब्राहीमा

जैसा कि तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बरकतें प्रदान की थीं

وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ

व अला आले इब्राहीमा

और आप के मानने वालों को भी बरकतें प्रदान की थीं

إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

इन्नाका हमीदुम् मजीद

निश्चय ही तू बड़ा महिमावान और बड़ी शान वाला है

दुआयें

दुरूद शरीफ़ के बाद दुआयें पढ़ी जाती हैं। कुछ दुआयें यहाँ लिखी जाती हैं।

رَبَّنَا اٰتِنَا

रब्बना आतेना

हे हमारे रब्ब दे हमें

فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً

फ़िद दुनिया हसनतन

इस जीवन में हर प्रकार की भलाई

وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ رَبِّ اجْعَلْنِي

वफ़िल आख़िरते हसनतन वक़िना अज़ाबन नार रब्बे जअल्नी

और परलोक में भी हर प्रकार की भलाई देना और हमें आग के अज़ाब से बचा हे मेरे रब्ब मुझे

مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ.

मुकीमिस्सलाते व मिन ज़ुर रियतीरब्बना वतकब्बल दुआ

नमाज़ का पाबन्द बनाऔर मेरी औलाद को भी (नमाज़ का पाबन्द बना) हे मेरे रब्ब तू मेरी दुआयें कुबूल कर

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ

रब्बनग़ फ़िरली

हे हमारे रब्ब तू हमें बख़्श दे

وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

वले वाले दय्या व लिल्मोमिनीना

और मेरे माँ बाप को भी और सभी मोमिनों को भी बख़्श देना

يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

योमा यक़ूमुल हिसाब

जिस दिन हिसाब होने लगे

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ.

अल्लाह हुम्मा इन्नि ज़लमतो नफ़सी । ज़ुल्मन कसीरन वला यग़फिरूज़ ज़नूबा इल्ला अनता फगफ़िरली मग़फेरातनमिन इन्देका वरहमनी इन्नका अन्तल ग़फूर्रहीम ।

अनुवाद :- ऐ अल्लाह तआला । मैंने (अपने आप) पर बहुत अत्याचार किए है तथा तेरे अतिरिक्त मेरे पापों को कोई क्षमा नहीं कर सकता । तथा मुझे क्षमा कर । अवश्य तू ही क्षमा करने वाला तथा दयालू है ।

इन दुआओं के पश्चात् पहले दायें तथा फिर बायें ओर मुह कर के कहो :-

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह

अनुवाद :- तुम पर अल्लाह की सलामती तथा कृपा हो।

नमाज़ के पश्चात की दुआएँ

नमाज़ के पश्चात 33-33 बार या 10-10 बार यह दुआ पढ़ो।

सुबहानल्लाहे

अनुवाद :- अल्लाह ही पवित्र है

अलहम्दो लिल्लाहे

अनुवाद :- सभी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए है

अल्लाहो अकबर

अनुवाद :- अल्लाह सबसे बड़ा है —

तथा एक बार यह दुआ पढ़ो :-

लाएलाहा इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीका लहूल मुल्को वलहम्दो वहोवा अला कुल्ले शैइन कदीर

अनुवाद :- अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं है। उसका कोई साथी नहीं वही मालिक है वही प्रशंसनीय है और वह हर चीज़ पर कादिर है।

अल्लहुम्मा अन्तस्सलामो व मिनकस्सलामो तबारकता या जुल्जलाले वल इकराम

अनुवाद :- ए अल्लाह तआला। तू सलामती उतारने वाला है तथा हर प्रकार की भलाई तुझ से ही प्राप्त है। ऐ आन बान शान वाले अल्लाह। तू बड़ी बरकत वाला है।

"वितर की नमाज़"

वितर की नमाज़ पढ़ने का समय इशा के पश्चात फ़जर से पहले तक होता है। रात के अन्तिम भाग में तहज्जुद की नमाज़ के पश्चात पढ़ो। यदि पिछली रात न उठने का डर हो तो इशा की नमाज़ के पश्चात पढ़ लो तो ठीक है। वितर की

नमाज़ में तीन रकअतें होती हैं इकट्ठी पढ़ लो या दो रकअत पढ़ कर सलाम फेर कर तीसरी रकअत अलग पढ़ो। तथा वितरों की तीसरी रकअत में "अल्लाहु अकबर" कह कर रुकू करने से पूर्व या रुकू करने के पश्चात सीधे खड़े हो कर यह दुआए कुनूत पढ़ो :-

"दुआए कुनूत"

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ، اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ،

अल्ला हुम्मा इन्ना नसतईनुक व नसतग़ फ़िरुक व नुअमिनु बिक व नत वक्कलु अलैका व नुसनी अलैकल ख़ैरा व नश कुरुका वला नकफ़ुरुका व नख़लउ व नतरुकु मंय्यफ़जुरुक अल्लाहुम्मा इय्याका नअबुदु व लक नुसल्ली व नसजुदु व इलैका नसआ व नहफ़िदु व नरजू रहमतका व नख़शा अज़ाबका इन्ना अज़ाबका बिल कुफ़्फ़ारे मुलहिक

अनुवाद :- ए अल्लाह तआला। हम तुझ से सहायता मांगते हैं। तथा तुझ से क्षमा मांगते हैं तथा हम तुझ पर इमान रखते हैं तथा भरोसा रखते हैं तथा हम तेरे गुण प्रकट करते हैं तथा तेरा धन्वाद करते हैं तथा हम कृतघ्न नहीं करते। तेरी आज्ञाओं का उल्लंघन करने वाले से अपना सम्बन्ध तोड़ते हैं।

ऐ अल्लाह हम तेरी इबादत करते हैं तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते हैं तथा सिजदा करते हैं तथा तेरी ओर दौड़ते हैं तथा खड़े होते हैं हम तेरी दया के आशावादी हैं।

तथा हम तेरे प्रकोप से डरते हैं। अवश्य तेरा प्रकोप तेरी उल्लंघन करने वालों पर भड़कता है।

"नमाज़ जुमा"

जुमा की नमाज़ का समय सूर्य ढलने से आरम्भ होता है साया ढल जाए तो नमाज़ पढ़ो। इमाम के अतिरिक्त कम से कम दो व्यक्ति और हों तो जुमा की नमाज़ पढ़ी जा सकती है। जुमा की नमाज़ से पूर्व ख़ुतबा होता है। ख़ुतबा सुनना भी आवश्यक है। जुमा की नमाज़ में दो रकअतें फ़र्ज़ हैं। फ़र्ज़ से पूर्व चार सुन्नतें पढ़ो परन्तु शर्त है कि इमाम ने ख़ुतबा आरम्भ न किया हो यदि ख़ुतबा आरम्भ हो चुका हो तो केवल दो सुन्नतें पढ़ो। जब इमाम ख़ुतबा के लिए खड़ा हो जाए तो मोअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) अज़ान कहे। तथा सुनने वाले इमाम के ख़ुतबा देने तक शान्तिपूर्वक बैठें।

"ईद की नमाज़"

ईदें दो होती हैं। एक ईद रमज़ान के रोज़े (व्रत) समाप्त होने पर शव्वाल (माह का नाम) की पहली तरीख़ को दूसरी ईद ज़िल्हज्जा की दस तारीख़ को होती है। ईद की नमाज़ में न आज़ान होती है न इक़ामत होती है। इन दोनों नमाज़ों के पढ़ने का समय सूर्य के चढ़ने पर आरम्भ होता है। पहली ईद का नाम "ईदुल फितर" तथा दूसरी ईद का नाम "ईदुल अज़हा" है। हर दो नमाज़ों की किरअत उच्च स्वर में होती है।

ईद की नमाज़ का तरीका

दोनों ईदों की नमाज़ एक ही तरह पढ़ी जाती है। दो रकअत नमाज़ पढ़ कर जुमा की नमाज़ की तरह इमाम ख़ुतबा दे। ख़ुतबा में समयानुसार उपदेश दे। पहली रकअत में नियत बांध कर दूसरी नमाज़ों की तरह पहले "सना" पढ़ो। तथा इसके पश्चात हाथ खोल कर सात बार तकबीर "अल्लाहु अकबर" कहो। दोनों हाथ कानों तक या कन्धों तक ला ला कर छोड़ते जाओ। हाथ बाँधना भी ठीक है। सात तकबीरों के पश्चात हाथ बाँध कर किरअत पढ़ो दूसरी रकअत पढ़ने से पूर्व

पाँच बार तकबीर ''अल्लाहु अकबर'' कहो। प्रत्येक दो रकअत में नियुक्त तकबीरों के अतिरिक्त बारह तकबीरें अधिक है।

ईद गाह को एक मार्ग से जाना तथा दूसरे मार्ग से वापिस आना सुन्नत है। वर्षा के कारण ईदगाह में यदि ईद की नमाज़ न पढ़ी जा सके तो मस्जिद में या दूसरे दिन भी यह नमाज़ पढ़ी जा सकती है। ईद का ख़ुतबा नमाज़ के पश्चात होता है।

नमाज़ क़सर

जो फ़र्ज़ नमाज़ चार रकअत वाली हो तो यात्रा की स्थिति में उसकी दो रकअत पढ़ो। यात्रा में सुन्नतें ज़रूरी नहीं। वितर तथा प्रातः की नमाज़ में सुन्नतें आवश्यक हैं। शहर से ग्यारह मील की यात्रा नियत करके तथा शहर से बाहर निकलने पर नमाज़ क़सर पढ़ी जा सकती है। यदि किसी स्थान पर पन्द्रह दिन तक रुकने का इरादा कर लिया हो तो नमाज़ क़सर नहीं पढ़ी जा सकती तथा यदि ऐसा नहीं किया तो फिर नमाज़ क़सर की जा सकती है। मुक़ीम (उस स्थान पर रहने वाला) इमाम के पीछे यात्री होनी की स्थिति में नमाज़ पूरी पढ़ो। यदि इमाम मुसाफ़िर हो तो इमाम क़सर नमाज़ पढ़ाएगा स्थानिक लोग बाद में अपनी नमाज़ पूरी करेंगे।

नमाज़ जमा :- जब व्यक्ति यात्री हो, या रोगी हो, वर्षा होती हो या वर्षा के कारण मस्जिद के मार्ग में बहुत कीचड़ हो या बहुत बड़ी मजबूरी हो तो नमाज़ें जमा करना जाएज़ है, कि नमाज़ पढ़ने वाला ज़ुहर-असर तथा मग़रिब-इशा को इकट्ठा पढ़ ले। नमाज़ जमा करने की स्थिति में सुन्नतें मुआफ़ हैं।

तीसरा अध्याय

मस्जिद के नियम

मस्जिद ख़ुदा का घर तथा इबादत करने का स्थान होता है। इसका बहुत सम्मान तथा सत्कार करना चाहिए। तथा कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो मस्जिद की मान मर्यादा के विरुद्ध हो।

(1) मस्जिद में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ो :-

बिस्मिल्ला हिस्सलामो अला रसूलिल्लाहे अल्लाहुम्मग़फिरली ज़नूबी वफ़ताहली अबवाबा रहमतेका

अर्थात :- मैं अल्लाह तआला का नाम ले कर मस्जिद में प्रवेश करता हूँ ख़ुदा के नबी पर दरूद हो तथा कृपा हो। ऐ अल्लाह मेरे पापों को क्षमा कर तथा मुझ पर अपनी दया के द्वार खोल दे।

(2) अस्सलामो अलैकुम कह कर मस्जिद में प्रवेश करो जितना समय भी मस्जिद में रहो शान्तिपूर्वक (चुपचाप) बैठो। यदि मजबूरी से कोई (बातचीत) करनी हो तो धीरे धीरे करनी चाहिए ताकि नमाज़ पढ़ने वालों की नमाज़ में बाधा न पड़े।

(3) मस्जिद में नमाज़ पढ़नी चाहिए। अल्लाह तआला की बातें करनी चाहिए तथा क़ुरान का पाठ करना तथा अन्य धार्मिक (दीनी) कार्य करने चाहिए। कोई व्यर्थ तथा बुरे काम नहीं करने चाहिए।

(4) मस्जिद में साफ़ सुथरे तथा पवित्र वस्त्र पहन कर जाओ कच्ची प्याज़, ज़हसुन या ऐसी ही कोई अन्य वस्तु खा कर मस्जिद में प्रवेश मत करो जिस के द्वारा दुर्गन्ध उत्पन्न हो तथा नमाज़ियों की नमाज़ में कष्ट हो।

(5) मस्जिद में थूकना या नाक साफ़ करना तथा कोई ऐसा कार्य करना जो मस्जिद के नियम के विरुद्ध हो सख़्त मना है।

(6) यदि कोई नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहा हो तो उसके सामने से मत गुज़रो। इसी प्रकार लोगों के सिरों तथा कन्धों पर से छलांग लगाते हुए आगे जाने का प्रयत्न करना बुरी बात है मस्जिद में जहां पर भी स्थान मिले वहां शान्तिपूर्वक बैठ जाओ।

(7) मस्जिद से बाहर निकलते समय यह दुआ पढ़ो :-

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलोका मिन फ़ज़लेका व रहमतेका

अर्थात :- ऐ अल्लाह तआला। मैं तुझ से तेरी दया तथा कृपा मांगता हूँ।

चौथा अध्याय

कलमाते तय्यबात

कलमा तय्यबा — ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलुल्ला

अर्थात :- अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं।

कलमा शहादत — अशहदो अल्लाएलाहा इल्लल्लाहो वहदहू लाशरीका लहू व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अबदोहू व रसूलोहू

अर्थात :- मैं गवाही देता हूं अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं तथा उसका कोई साझी नहीं। तथा मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके सेवक और रसूल हैं।

कलमा तमजीद — सुबहानल्लाहे वलहम्दोलिल्लाहे व लाएलाहा इल्लल्लाहो वल्लहो अकबर वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ल हिलअलिय्युल अज़ीम

अर्थात :- पवित्र है अल्लाह तआला। तथा अन्य सभी प्रशंसाएं अल्लाह तआला के लिए हैं अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं तथा अल्लाह ही सबसे बड़ा है। तथा पापों से बचने तथा भलाई करने की शक्ति अल्लाह तआला ही देता है जो बहुत शान वाला है।

कलमा तौहीद- ला इलाहा इल्लल्लाहो वहदहू ला शरीक लहू लहुल मुल्को वलहुल हम्दो योहयी वयुमीतो वहुवा हय्युन । यमूतो अबदा । जुलजलाले वलइकराम ।

बेयदेहिल ख़ैरो वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर

अर्थात :- अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं उसका कोई अन्य साथी नहीं। उसी का ही शासन है तथा अन्य प्रशंसाएँ उसी की हैं वही जीवित करता है वही मृत्यु देता है तथा वही सदा के लिए जीवित है तथा उसकी कभी मृत्यु नहीं होगी वह बहुत सम्मान वाला तथा उच्च है प्रत्येक प्रकार की भलाई उसी के हाथ में है। तथा वही प्रत्येक कार्य करने की शक्ति रखता है।

कलमा इसतिग़फार - असतिग़फ़िरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ले जम्बिन अज़नबतोहू अमदन औ खताअन सिर्रन औ अलनिय्यतन व अतूबो अलैहे मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी आअलमों व मिनज़्ज़म्बिल्लज़ी ला आअलमों इन्नका अन्ता अल्लमुल ग़यूबे व सतारुल अयूबे व ग़फ़्फ़ारुज़ ज़नूबे ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्युल अज़ीम

अर्थात :- मैं अल्लाह तआला से क्षमा मांगता हूं जो मेरा रब है अन्य सभी पाप जो मुझ से हुए हैं जान बूझ कर या भूल कर या गुप्त रूप में या स्पष्ट रूप में उन से मैं क्षमा मांगता हूं उसी के आगे उस पाप से जिस का मुझे स्वयं ज्ञान है तथा उस पाप से जिसका मुझे ज्ञान नहीं। वास्तव रूप में ग़ैब का इल्म ऐ अन्तरयामी तुझी को है तथा पापों को गुप्त रखना तेरे वश में है तथा पापों को क्षमा करने वाला भी तू ही है तथा भलाई करने की शक्ति और पापों से बचने की शक्ति अल्लाह तआला जो उच्च शान वाला है की सहायता के बिना नहीं मिल सकती।

पाचवां अध्याय

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तथा

आप के उत्तराधिकारी

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबसे बड़े आक़ा तथा सभी नबियों के सरदार हैं। आप के द्वारा ही इस्लाम धर्म जैसा उत्तम तथा सम्पूर्ण धर्म हमें प्राप्त हुआ। आप पर क़ुरान मजीद उतरा जिसमें हमारी भलाई तथा अच्छाईयों की सारी अच्छी से अच्छी बातें उपलब्ध हैं।

रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आज से (1400) चौदह सौ वर्ष पूर्व 20 अप्रैल 570 ई. को अरब देश के नगर "मक्का" में पैदा हुए। आप का वंश (ख़ानदान)बहुत उच्च तथा शरीफ़ वंश था। आप के पिता का नाम अब्दुल्लाह और माता का नाम आमिना था। आप के जन्म से पूर्व आप के पिता का देहान्त हो गया था तथा अभी आप कुछ वर्ष के ही थे कि आप की माता का भी देहान्त हो गया तथा आप अनाथ हो गए। माता पिता के देहान्त के पश्चात पहले आप.के दादा अब्दुल मुत्लिब के घर तथा दादा के देहान्त के पश्चात आप के चाचा अबू तालिब के घर आप का पालन पोषण हुआ। आप आरम्भ से ही अच्छे-अच्छे तथा पुण्य कर्म किया करते थे। आप बुरी बातों से बचते रहे। एक ही ख़ुदा की इबादत करते निर्धनों की सहायता करते तथा सदा सत्य बोलते थे। जब आप चालीस (वर्ष) के हुए तो अल्लाह तआला ने आप को नबी तथा रसूल बनाया। तथा संसार का सुधार करने का कार्य आप को सौंपा गया। आप से पूर्व संसार में जितने नबी तथा रसूल आए सब का लोगों ने कठोरता से विरोद्ध किया। इसी तरह आप का भी कठोरता से विरोध हुआ। आपने लोगों को समझाया कि मूर्ति पूजा न करो तथा केवल ख़ुदा की उपासना करो तो मक्का के लोग जो मूर्ति पूजा करते थे आप के कट्टर शत्रु बन मए उन्होनें आप तथा आप के साथियों को जो मुसलमान कहलाते थे उन्हें कठोर दुखः दिये तरह तरह के दुख तथा अत्याचार किए। परन्तु आप ने तथा आप के (सहाबा) साथियों ने कोई परवाह न की। आप लगातार तेरह वर्ष तक कष्ट सहन करते रहे तथा दिन रात इस्लाम का प्रचार करते रहे। अन्त में जब अत्याचार बहुत बढ़ गया तो अल्लाह

तआला की आज्ञा से मक्का को छोड़ कर आप तथा आप के साथी चले गए तथा ''मदीना मुनव्वरा'' में बस गए। इस घटना को ''हिजरत'' कहते हैं। दस वर्ष तक आप वहां रह कर प्रचार का कार्य करते रहे। इस समय में मुख़ालफ़ों से कई युद्ध हुए। परन्तु प्रत्येक युद्ध का परिणाम यह हुआ कि मुसलमान उन्नति करते चले गए तथा इस्लाम के शत्रुओं की शक्ति कम होती गई। अन्यथा अन्त में मक्का भी विजय हो गया तथा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ''मक्का'' में दाख़िल हुए।

शत्रुओं का विचार था कि मुसलमान हमारे अत्याचार का बदला लेंगे। परन्तु हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सब को क्षमा कर दिया। इस तरह आप मित्रों तथा शत्रुओं के लिए दया (रहमत) का पात्र सिद्ध हुए। आप के इस व्यवहार तथा उच्च आचरण का परिणाम यह हुआ कि सारा ''अरब'' देश मुसलमान हो गया।

रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ''मक्का'' की विजय के पश्चात केवल दो वर्ष तक जीवित रहे। घटना ''हिजरत'' के गयारह वर्ष पश्चात ८ जून ६३२ ई० ''मदीना मुनव्वरा'' में आप का देहान्त हो गया।
वहीं हुज़ूर की कब्र है।

रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारी

हज़रत रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के देहान्त के उपरान्त निम्नलिखत चार ख़लीफ़े आपके उत्तराधिकारी हुए। जिनके नाम यह हैं :-

(1) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहो अन्हु।
(2) हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हु।
(3) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहो अन्हु।
(4) हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हु

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के देहान्त के पश्चात हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो पहले ख़लीफ़ा निर्वाचित हुए । लगभग सभी मुहाजिरों (हिजरत करने वालों) और अन्सार (मदीना के वह लोग जिन्होंने मुहाजिरों की मदद की थी) ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ पर बैअत करके आप को उम्मत का पहला ख़लीफ़ा स्वीकार किया हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो का असली नाम अब्दुल्लाह बिन अबी कुहाफ़ा था । 'अबूबकर' आप की 'कुन्नियत' थी और 'सिद्दीक' आप की उपाधि थी, जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ओर से आप को प्रदान की गई थी आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दो वर्ष छोटे थे । मक्का में पैदा हुए वहीं पालन पोषण हुआ एवं वहीं शिक्षा प्राप्त की आप का असल काम व्यापार था । आप व्यापारिक काफ़ले लेकर विदेशों में जाया करते थे ।

आप बड़े धनवान और प्रभावशाली थे। बड़े दयालु और मैहमान नवाज़ थे। दोस्त व दुश्मन सब की बराबर सहायता करते थे। आप का चरित्र और चाल चलन बड़ा पवित्र था। प्रारम्भ में जबकि अरबवासी धड़ल्ले से शराब पिया करते थे आप ने कभी शराब को हाथ तक नहीं लगाया। पवित्रता और परहेज़गारी आप में कूट कूट कर भरी हुई थी। आप के पूर्वज मूर्ति पूजक थे, परन्तु आप को बचपन से ही मूर्ति पूजा से घृणा थी।

आप हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ साये की तरह लगे रहते थे। जब हुज़ूर ने मक्का से हिजरत की तो आप अपने पूरे परिवार को अल्लाह के नाम पर छोड़ कर हुज़ूर के साथ रवाना हो गये। आप लगभग सभी युद्धों में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ शामिल हुए। और प्रत्येक युद्ध में अपनी जान को ख़तरे में डाल कर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रक्षा की । आप बड़े खुले दिल से अपना सब कुछ दीन के मार्ग पर ख़र्च करते थे । जब आप मुसलमान हुए तो चालीस हज़ार दिरहम आप के पास थे और वे सब के सब आप ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ख़र्च कर दिए ।

जंग-ए-तबूक के लिये जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने धन की कुर्बानी का आहवान किया तो हज़रत अबूबकर ने अपना सारा धन इस्लाम के लिए क़ुर्बान कर दिया और अपने परिवार के लिए एक दिरहम भी बाकी न रखा। आप का निधन 13 हिजरी या 634 ई. को हुआ। उस समय आप की आयु 63 वर्ष की थी। आपने सवा दो वर्ष ख़िलाफ़त की।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो के देहान्त के पश्चात सभी सहाबा और मुसलमानों ने बिना किसी मतभेद के हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ पर बैअत की। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जीवन काल में ही आप को सभी 'सहाबा' में असाधारण मान-सम्मान प्राप्त था। सभी आप का आदर करते थे और आप की पवित्रता, बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता की मानते थे।

हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो की तरह आप भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अत्यन्त प्रिय थे। 'बुख़ारी' और 'मुस्लिम' की एक हदीस से पता चलता है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने स्वयं हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की ख़िलाफ़त के बारे में ख़ुशख़बरी दी थी। जैसा कि अबू हुरैरा से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक बार एक ख़्वाब का वर्णन करते हुए फ़र्माया था कि मैंने आप को एक ऐसे कूंऐं पर देखा जिस पर एक डोल पड़ा था। मैंने कुछ डोल पानी के खींचे। मेरे बाद अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने डोल ले लिया परन्तु एक दो डोल खींचने के बाद वे थक गए। फिर 'उमर' आये और उन्होंने इस इस प्रकार डोल पर डोल खींचे कि मैंने किसी बलवान व्यक्ति को भी इस प्रकार खींचते नहीं देखा। यहा तक कि चारों ओर से प्यासे आये और अपनी प्यास बुझाई। इस हदीस के विषय में ''अइम्मा'' की राय है कि यह हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो के पश्चात हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो की 'ख़िलाफ़त' की ओर संकेत है। हम

देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह बिल्कुल सही सिद्ध हुई और संसार ने देख लिया कि आप के ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों को बड़ी-बड़ी विजय प्राप्त हुई और इस्लाम दूर-दूर तक फैल गया।

आप का नाम 'उमर' और 'कुन्नियत' '**अबू अफ़स**' और 'फ़ारूक' की उपाधि आपको हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने प्रदान की थी। आप जब जवान हुए तो पारिवारिक रिवाज के अनुसार आप ने युद्ध कलाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उस समय 'कुरैश' कबीले में केवल कुछ व्यक्ति ऐसे थे जो लिखना पढ़ना जानते थे उनमें से एक हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो भी थे। आपको पहलवानी का बहुत शौक था और जो स्थान पहलवानी के कारण ईरान में रूस्तम को प्राप्त था वही आप को था। युद्ध विद्या में भी किसी की जुरत नहीं थी कि आप का मुकाबला करे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो आरम्भ में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जानी दुश्मन थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआओं के परिणाम स्वरूप जब आप मुसलमान हुए तो स्वयं इस्लाम के दुश्मनों के पास जा जा कर उन्हें बताते कि मैंने बुत परस्ती छोड़ कर दीने इस्लाम कबूल कर लिया है, इस्लाम के सबसे बड़े विरोधी अबू जहल के पास जाकर जब आपने अपने मुसलमान होने की घोषणा की तो उसने डर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। आप के इस्लाम लाने से पहले मुसलमान मुख़ालफ़ों के डर से खुल्लमखुल्ला इबादत नहीं कर सकते थे और न ही 'ख़ाना काबा' में नमाज़ पढ़ सकते थे। लेकिन आपके मुसलमान होने के पश्चात मुसलमान बिना डर के ख़ाना काबा में नमाज़ पढ़ने लगे।

आप इस्लामी हकूमत के शासक थे फिर भी आपकी सादगी की यह स्थिति थी कि आप के कपड़ों में प्रायः जोड़ लगे रहते थे। मस्जिद में नंगे फ़र्श पर हाथ का तकिया लगा कर सो जाते। आप ने 634 से 645 तक ख़िलाफ़त की। फ़ैरोज़ अबूलूलू नामी एक व्यक्ति एक दिन फ़जर की नमाज के समय नमाज़ियों में आ कर खड़ा हो गया और

जब आप नमाज़ पढ़ा रहे थे खंजर का बार बार वार किया। आप सख़्त ज़ख़्मी हो गए। ज़ख़्मी होने के बाद केवल तीन दिन जीवित रह कर 63 साल की आयु में आप अल्लाह को प्यारे हो गए।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तीसरे ख़लीफा हुए हैं। आप पांचवें मुसलमान थे अर्थात आपसे पहले केवल चार व्यक्तियों ने इस्लाम क़ुबूल किया था। आप हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहो अन्हो की तब्लीग़ से मुसलमान हुए। आपने दो 'हिजरतें' की थीं अर्थात आप ने पहले हब्शा (इथोपिया) की ओर हिजरत की थी दूसरी बार आप 'हिजरत' करके मदीना गए थे। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नुबुंव्वत से पहले अपनी सुपुत्री हज़रत रुकय्या का विवाह हज़रत उस्मान से कर दिया था। 'हज़रत रुकय्या' के निधन के पश्चात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी दूसरी सुपुत्री 'हज़रत उम्मे कुल्सूम' का विवाह भी हज़रत उस्मान से कर दिया था। इसलिए आप को 'ज़ुन्नूरैन' अर्थात दो नूरों (प्रकाशों) वाला कहा जाता है। हज़रत उस्मान ग़नी के अतिरिक्त संसार में कोई ऐसा सौभाग्य शाली नहीं हुआ जिसके निकाह में किसी नबी की दो बेटियाँ एक के बाद एक आई हों।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो 'सहाबा' में सब से धनवान थे आप ख़ुदा की राह में ख़र्च करने में हमेशा आगे आगे रहते थे। जंग-ए-तबूक के लिए आप ने 6 सौ ऊंठ और पचास घोड़े हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत किए थे। एक बार जब आकाल पड़ा तो आप ने मदीना के ग़रीब लोगों में बहुत सा अनाज बांटा था आप की इस दयालुता और उदारता के कारण आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आप को ग़नी की उपाधि प्रदान की थी। आप लगभग सभी युद्धों में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कंधे से कंधा मिला कर लड़े। परन्तु जंग-ए-बदर के समय हज़रत

रुकय्या बीमार थी इसलिए आप इस युद्ध में शामिल नहीं हुए थे परन्तु फिर भी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया था कि उस्मान को जंग-ए-बदर में शामिल समझना चाहिए। मनासिक-ए-हज सब से बेहतर हज़रत उस्मान जानते थे। आप को इबादत का बहुत शौक था रात की नमाज़ अर्थात् तहज्जुद की नमाज़ बाकायदगी से पढ़ते थे। रोज़े बहुत रखा करते थे। आप ने आरम्भ से ही बड़ा पवित्र जीवन व्यतीत किया और कभी शराब को हाथ भी नहीं लगाया।

आप 18 ज़िल हज सन 35 हिजरी (656 ई.) को बाग़ियों के हाथों शहीद हुए।

हज़रत अली करमुल्लाह वजहो

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहो अन्हो की शहादत के पश्चात हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो चौथे ख़लीफ़ा चुने गए। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के चचेरे भाई थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पुत्री हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहो अन्हा का विवाह आप से हुआ था। आप बहुत छोटी आयु में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ईमान लाए उस समय आप की आय दस वर्ष थी।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पांच वर्ष की आयु में हज़रत अली को पालन-पोषण के लिए अपने चाचा 'अबू तालिब' से ले लिया था। आप औलाद की भान्ति हज़रत अली से प्रेम करते थे और यही हालत हज़रत अली की भी थी। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब मक्का से मदीना की ओर हिजरत की तो हुज़ूर आपको मक्का में छोड़ गए थे ताकि आप सभी अमानतें उनके मालिकों के हवाले कर दें। अमानतें लौटाने के बाद आप भी हिजरत करके मदीना पहुंच गए थे। हज़रत अली के मदीना पहुंचने तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना के बाहर बड़ी बेचैनी से आप की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब हज़रत अली आ गए तो हज़ूर आप को साथ लेकर मदीना में दाख़िल हुए। जंग-ए-तबूक के अतिरिक्त आप सभी लड़ाइयों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहे वसल्लम के साथ रहे।

वीरता एवं दलेरी में सारे अरब देश में कोई भी हज़रत अली का मुकाबला नहीं कर सकता था। आप की असाधारण जुरत के आधार पर ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आप को 'असदुल्लाह' की उपाधि दी थी। जंग-ए-उहद में आप को सोलह ज़ख़्म आये थे। जंग-ए-ख़ैबर में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आप को झंडा देते हुए यह पेशगोई की थी कि 'ख़ैबर' अली के हाथ पर विजित होगा। हज़रत अली की बहादुरी के कारनामों से इतिहास भरा पड़ा है।

हज़रत अली को ग़रीबी से अत्यन्त प्रेम था। आप का जीवन अत्यन्त सादा और ग़रीबों जैसा था। साधारण से घर के अतिरिक्त सारा जीवन आप ने कोई इमारत नहीं बनवाई। घरेलू सामान भी बहुत थोड़ा और साधारण था। कोई सेवक न था। घर का सारा काम स्वयं हज़रत 'फ़ातिमा' रज़ियल्लाहो अन्हा अपने हाथ से करती थीं। चक्की पीसते पीसते हाथों में छाले पड़ गए थे। कई बार घर में चूला भी नहीं जलता था और भूखे रहते थे।

आप की 'ख़िलाफ़त' का समय 35 हिजरी से 42 हिजरी तक था। 18 रमज़ान सन् 40 हिजरी को जब आप फ़जर की नमाज़ के लिए जा रहे थे इस समय अबदुल रहमान (रब्बे बल्ज़म) नामक एक दुष्ट ने आप पर तलवार से वार किया जिस कारण आप बुरी तरह घायल हो गये और 20 रमज़ान सन् 40 हिजरी, इतवार की रात को आप का देहान्त हो गया उस समय आप की आयु 63 वर्ष की थी।

छठा अध्याय

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

साहिब है आप का जन्म 13 फ़रवरी 1835 ई. को कादियान ज़िला गुरदासपुर पंजाब (भारत) में हुआ। आप के पिता का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम मुरतज़ा साहिब था आप बचपन से ही बहुत नेक और ख़ुदा की इबादत (उपासना) करने वाले थे आप हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत प्रेम करते थे बुरे कामों से घृणा करते और ग़रीब लोगों की सहायता करते थे।

जब आप चालीस वर्ष के हुए तो अल्लाह तआला ने आप को मसीह मौऊद व मेहदी माअहूद बनाया। इस्लाम के प्रचार, और उसकी उन्नति और क़ुर्आन शरीफ़ की शिक्षा का काम आप को सौंपा।

मुसलमानों में कई तरह की बुराइयाँ, कमज़ोरियां और अन्य दोष आ गए थे। आप ने इन सब बुराइयों को दूर करके इस्लाम की असली सच्चाई को दुनियाँ के सामने पेश किया। आप ने अपनी जमाअत में शामिल होने वाले लोगों का नाम अहमदी मुसलमान रखा।

ख़ुदा की ओर से आने वाले दूसरे सुधारकों की तरह लोगों ने विरोध किया और आपकी और आपके मानने वालों को तरह तरह के कष्ट दिए। पर अल्लाह तआला की सहायता आप के साथ थी। आप की जमाअत उन्नति करती रही यहां तक कि इस्लाम सारी दुनियां में फैल गया।

अल्लाह तआला ने बहुत से निशान (चिन्ह) और चमत्कार आप के लिए दिखाए आप ने लगभग अस्सी (80) पुस्तकें लिखीं इस्लाम के विरोधियों का मुक़ाबला किया और इस्लाम की सच्चाई को पेश किया अन्त में 26 मई 1908 को लाहौर में आप का देहान्त हो गया।

आपकी क़ब्र कादियान (भारत) में है।

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह अव्वल र. अ. त. अ.

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात हज़रत हकीम हाफ़िज़

मौलवी नूरुद्दीन रज़ि अल्लाहो अन्हो जमाअते अहमदिय्या के पहले ख़लीफ़ा बने आप मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के श्रद्धालु और साथी थे।

आप देश के बहुत प्रसिद्ध हकीम और इस्लाम धर्म के उच्चकोटि के विद्धवान थे आप को यह गर्व प्राप्त था कि आप सब से पहले बैअत कर के जमाअते अहमदिय्या में दाखिल हुए थे। आप को मसीह मौऊद से बहुत प्रेम था आप की ख़िलाफ़त में जमाअत ने बहुत उन्नति की जो कि छः वर्ष तक जारी रही 13 मार्च 1914 को आप का कादियान में देहान्त हो गया।

आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कब्र के साथ दफ़न किया गया।

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह अव्वल रज़ि अल्लाहो अन्हो के देहान्त के पश्चात 14 मार्च 1914 ई. को हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के पुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा चुने गए।

अल्लाह तआला ने आप को जमाअत की उन्नति के लिए एक विशेष प्रकार की सफलता दी। आपकी 51 वर्षों की ख़िलाफ़त के समय जमाअत ने प्रत्येक रूप में बहुत उन्नति की जमाअत का प्रबन्ध बहुत मज़बूत हो गया।

आप ने जमाअत के लोगों की अच्छी तरह देखभाल की और इस्लाम के प्रचार के लिए अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका और दुनिया के दूसरे देशों में प्रचारक (मुबल्लिग़) भिजवाए। मस्जिदें बनाई और कई भाषाओं में क़ुर्आन मजीद के अनुवाद करवाए और उन्हें छपवाया। आप के द्वारा लाखों व्यक्तियों ने इस्लाम की सच्चाई को स्वीकार किया और दुनिया के कोने कोने में अहमदी जमाअतें

क़ायम हुई और इस प्रकार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद और इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम की वह भविष्यवाणी जिसके द्वारा आप के एक विशेष पुत्र के जन्म की सूचना दी थी वह सभी सूचनाएं बहुत शान के साथ पूरी हुई।

अन्त में आप ने जब अपने सारे काम सफ़लतापूर्वक समाप्त कर लिए और अपनी सफ़लता को अपनी आँखों से देख लिया तो 8 नवम्बर 1965 की सुबह 2 बज कर 20 मिनट पर आप का देहान्त हो गया और आप अपने ख़ुदा से जा मिले। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन।

9 नवम्बर 1965 को लगभग पचास हज़ार (50,000) अहमदी आप की नमाज़-ए-जनाज़ा में शामिल हुए जिस के पश्चात आप को बहिश्ती मक़बरा रब्वाह (पाकिस्तान) में हज़रत अम्मा जान (यह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पत्नी और ख़लीफ़ात-उल-मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो की माता थी) रज़ि अल्लाहो अन्हा के निकट अमानतन दफ़न कर दिया गया।

अल्लाह तआला आपको स्वर्ग में ऊँचा स्थान दे -आमीन

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह सालिस रहम हुल्लाह तआला

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो के देहान्त के पश्चात 9 नवम्बर 1965 को हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब एम. ए. जमाअते अहमदिय्या के तीसरे ख़लीफ़ा बने।

आप का जन्म 1909 ई. को अल्लाह तआला की आकाशवाणी के आधार पर हुआ तेरह (13) वर्ष की आयु में ही आपने सारा क़ुर्आन मजीद ज़बानी याद कर लिया फिर आपने उच्च सांसारिक व धार्मिक (दीनी) शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात अपना पूरा जीवन दीन के लिए अर्पण कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने एक विशेष गुणों वाले पोते के जन्म की सूचना भी आकाशवाणी द्वारा दी थी जिसने दीन की विशेष प्रकार से सेवा करनी थी आप

के पिता हज़रत ख़लीफ़ात-तुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो को भी आप के बारे में कई भविष्यवाणियों द्वारा सूचनाएं दीं। यह सभी सूचनाएं बड़ी शान के साथ पूरी हुईं और हमारे विश्वास को बढ़ाने का कारण बनी। सत्तरह (17) वर्ष की ख़िलाफ़त को सफ़लता पूर्वक निभाते हुए 8/9 जून 1982 को मध्यरात्रि को लगभग पौने एक (12 : 45) को थोड़ी सी तब्बियत ख़राब होने के बाद आप का देहान्त हो गया और आप सच्चे ख़ुदा से जा मिले। 10 जून 1982 को 60/70 हज़ार अहमदी आप की नमाज-ए-जनाज़ा में शामिल हुए जिस के पश्चात आप को बहिश्ती मक़बरा (रब्वाह) में ख़लीफ़ात-तुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो के दायें पहलू दफ़न किया गया।

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह राबेए अय्यद हुल्लाहो तआला

हज़रत ख़लीफ़ -तुल-मसीह सालिस रहम हुल्लाह तआला के देहान्त के पश्चात हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब 10 जून 1982 को ख़लीफ़ा चुने गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते और ख़लीफ़ -तुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो के पुत्र हैं आप का जन्म 18 दिसम्बर 1928 को हुआ।

पहले आप ने बी.ए. पास किया फिर जामिआ अहमदिय्या से मुबल्लिग़ की पढ़ाई पूरी की और मुबल्लिग़ (प्रचारक) बने जामिआ अहमदिय्या से शाहिद की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात आप शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंगलिस्तान भी गए और दो वर्षों तक वहां रहे।

आप बहुत अच्छे लेखक हैं और बहुत अच्छा भाषण भी देते हैं आप के ख़ुतबे से लोग बहुत प्रभावित होते हैं आप की पुस्तक "मज़हब के नाम पर ख़ून" विद्वान लोगों में बहुत प्रसिद्ध हो चुकी है।

आप की ख़िलाफ़त के समय से जमाअते अहमदिय्या के द्वारा इस्लाम की उन्नति बहुत तेज़ी से हो रही है।

जमाअते अहमदिय्या की इस विशेष उन्नति को देख कर पाकिस्तान ने जलन के कारण से जमाअते अहमदिय्या के लोगों पर बहुत अत्याचार किए और प्रत्येक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिए पर जमाअते अहमदिय्या के लोगों की हिम्मत और हौसले बहुत बड़े हैं और हर तरह के बलिदान क़ुर्बानी की हिम्मत रखते हैं। विपता (मुश्किल) के इस समय में आज कल वक़्ती तौर पर हुज़ूर लन्दन में रह रहे हैं और जमाअते अहमदिय्या की उन्नति के लिए काम कर रहे हैं और दीन के कामों में व्यस्त हैं।

अल्लाह तआला आप की सहायता करे और अपनी छत्रछाया में रखे और आप की ख़िलाफ़त का समय इस्लाम की उन्नति के लिए हर तरह से बाबरकत सिद्ध हो। आमीन।

सातवां अध्याय
अहमदिय्या जमाअत को स्थापित करने का उद्देश्य

(1) अल्लाह तआला पर सच्ची आस्था पैदा करना।

(2) मुसलमानों में जो सिद्धान्त क़ुरआने करीम की शिक्षा के विरुद्ध उत्पन्न हो गए हैं तथा उनमें जो कमज़ोरियाँ तथा कुरीतियां आ गई हैं उनका सुधार करने का प्रयत्न करना।

(3) वर्तमान युग की आवश्यकता के अनुसार क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा को संसार के सामने प्रस्तुत करना।

(4) संसार के सभी धर्मों के मुक़ाबले में इस्लाम धर्म को सच्चा तथा उच्च (ग़ालिब) करना। विशेष रूप में ईसाई धर्म तथा नास्तिकों का मुक़ाबला करना।

(5) संसार की सब जातियों को बताना की अन्तिम युग के सुधार के लिए जिस महान व्यक्ति के आने का सन्देश संसार के विभिन्न धर्मों को दिया गया था वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने से सम्पूर्ण (पूरा) हो गया।

(6) संसार में एक ऐसा धार्मिक कानून स्थापित (कायम) करना जिस के द्वारा वर्तमान कुरीतियों में सुधार हो तथा लोग शान्तिपूर्वक, मेल मिलाप तथा प्रेम के साथ रहने लगें।

आठवां अध्याय

अहमदिया जमाअत के सिद्धान्त

अहमदिया जमाअत केवल उन्हीं सिद्धान्तों पर विश्वास रखती है जो क़ुरान पाक और रसूल पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने प्रस्तुत (पेश) किये। परन्तु जो ग़लत सिद्धान्त लोगों ने इस्लाम धर्म और क़ुरान मजीद की ओर जोड़ दिए थे उन्हें वह स्वीकार नहीं करती।

हमारे सिद्धान्त ये हैं :-

(1) अल्लाह एक है। उसका कोई साझी नहीं।

(2) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं। आप सब नबियों के सरदार तथा "ख़ातमुन्नबिय्यीन" अर्थात शरीअत लाने वाले अन्तिम रसूल नबी हैं। आप पर जो पुस्तक उतरी अर्थात क़ुराने मजीद वह सब आकाशीय पुस्तकों से उच्च तथा उत्तम है।

(3) हम अल्लाह तआला के फ़रिश्तों पर, उसके भेजे हुए सब (नबियों) पर तथा सब आकाशीय पुस्तकों पर विश्वास रखते हैं।

(4) हमारा विश्वास है कि क़यामत का दिन अटल है। उस दिन अल्लाह तआला व्यक्ति के कर्मों का फल (बदला) देगा।

(5) हमारा विश्वास है कि क़ुराने क़रीम संसार की अन्तिम आकाशीय (इल्हामी) पुस्तक है। अब क़यामत तक कोई अन्य शरीअत की पुस्तक नहीं

उतरेगी।

(6) हम इस बात पर आस्था (ईमान) और विश्वास रखते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम संसार के अन्तिम शरीअत वाले नबी हैं। आपके पश्चात अब कोई नयी शरीअत वाला नबी नहीं आ सक़ता तथा न ऐसा नबी आ सकता है जो आप की उम्मत में से न हो।

(7) रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अन्तिम युग में जिस मसीह तथा मैहदी के आने का सन्देश दिया था। हमारा विश्वास है वह मसीह तथा मैहदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी हैं। आप के द्वारा ही संसार में इस्लाम धर्म उन्नति करेगा।

(8) जिस प्रकार सारे अवतारों की मृत्यु हो चुकी है इसी प्रकार ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की भी मृत्यु हो गई है। उनकी कब्र कश्मीर के नगर ''श्रीनगर'' में मौजूद है।

(9) अल्लाह तआला का ऐसा कोई गुण नहीं जो पहले चलता हो तथा अब बन्द हो गया हो। जिस प्रकार पूर्व अपने बन्दों से वार्तालाप (कलाम) करता था तथा उनकी प्रार्थनाओं को सुनता था उनका उत्तर देता था इसी प्रकार वह अब भी करता है।

(10) हमारी आस्था है कि क़ुराने पाक की कोई आज्ञा तथा कोई भाग भी ऐसा नहीं जो अब समाप्त हो गया है। सारा क़ुरान शरीफ़ आरम्भ से अन्त तक स्वीकार (मानने) योग्य है तथा क़यामत तक स्वीकार योग्य रहेगा।

नौवां अध्याय

कुछ ज़रूरी नज़में (कविताएं)

कलाम हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में।

शाने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

(1) वो पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा

नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

(2) सब पाक हैं पैयम्बर इक दूसरे से बेहतर

लेकअज़ ख़ुदाए बरतर ख़ैरूल वरा यही है

(3) वो यारे लामकानी वो दिलबरे निहानी

देखा है हमने उससे बस रहनुमा यही है

(4) वो आज शाहे दीं है वो ताजे मुरसलीं है

वो तय्यबो अमीं है उसकी सना यही है

(5) उस नूर पर फ़िदा हूं उसका ही मैं हुआ हूं

वो है मैं चीज़ क्या हूं बस फ़ैसला यही है

(6) वो दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना

बाक़ी है सब फ़साना सचबे ख़ता यही है

दिल में यही है हर दम तेरा सहीफ़ा चूमूँ
क़ुरआँ के गिर्द घूमूँ काबा मेरा यही है

नुसरते इलाही

(1) ख़ुदा के पाक लोगों को ख़ुदा से नुसरत आती है

जब आती है तो फिर आलम को इक आलम दिखाती है

(2) वो बनती है हवा और हर ख़से राह को उड़ाती है

वो हो जाती है आग और हर मुख़ालिफ़ को जलाती है

(3) कभी वह ख़ाक हो कर दुश्मनों के सर पे पड़ती है

कभी हो कर वो पानी उन पर इक तूफ़ान लाती है

(4) ग़र्ज़ रुकते नहीं हरगिज़ ख़ुदा के काम बन्दों से

भला ख़ालिक़ के आगे ख़लक़ की कुछ पेश जाती है

कमर है चाँद औरों का हमारा चाँद कुरआँ है

जमालो हुस्ने कुरआँ नूरे जाने हर मुसलमाँ है

क़मर है चाँद औरों का हमारा चाँद क़ुरआँ है
नज़ीर उसकी नहीं जमती नज़र में फ़िक्र कर देखा
भला क्यों कर न हो यकता कलामे पाक रहमा है
बहारे जाविदाँ पैदा है उसकी हर इबारत में
न वो ख़ूबी चमन में है न उससा कोई बुस्तां है
ख़ुदा के क़ौल से क़ौले बशर क्यों कर बराबर हो
वहां क़ुदरत यहां दरमान्दगी फ़र्के नुमाया है
मलाइक जिस की हज़रत में करें इकरारे ला इल्मी
सुखन में उसके हमताई कहाँ मकदूरे इन्साँ हैं
बना सकता नहीं इक पाँव कीड़े का बशर हरगिज़
तो फिर क्यों कर बनाना नूरे हक का उसपे आसाँ है
हमें कुछ कीं नहीं भाइयो नसीहत है ग़रीबाना
कोई जो पाक दिल होवे दिलों जां उसपे क़ुरबाँ है

क़ुराने शरीफ़ की ख़ूबियाँ

नूरे फ़ुरकाँ है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वो जिससे यह अनवार का दरिया निकला
हक़ की तौहीद का मुरझा ही चला था पौदा
नागहाँ ग़ैब से यह चश्मा-ए-असफ़ा निकला
या इलाही तेरा फ़ुरकाँ हैं कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब इसमें मुहय्या निकला
सब जहाँ छान चुके सारी दुकानें देखीं
मए इरफ़ां का वही एक्र ही शीशा निकला

शाने इस्लाम

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हमने
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हमने

कोई मज़हब नहीं ऐसा कि निशां दिखलाए

यह समर बाग़े मुहम्मद से ही खाया हमने

हमने इस्लाम को ख़ुद तजरबा करके देखा

नूर है नूर उठो देखो सुनाया हमने

और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर न था

कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हमने

आओ लोगो के यहीं नूरे ख़ुदा पाओगे

लो तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हमने

आज उन नूरों का इक ज़ोर है इस आजिज़ में

दिल को उन नूरों का हर रंग दिलाया हमने

जब से ये नूर मिला नूरे पयम्बर से हमें

ज़ात से हक़ की वजूद अपना मिलाया हमने

मुस्तफ़ा पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत

उस से यह नूर लिया बारे ख़ुदाया हमने

रबत है जाने मुहम्मद से मेरी जां को मदाम

दिल को वह जाम लबालब है पिलाया हमने

हम हुए ख़ैरे ऊमम तुझ से ही ए ख़ैरे रुसूल

तेरे बढ़ने से क़दम आगे बढ़ाया हमने

''आदमी ज़ाद तो क्या चीज़ फ़रिश्ते भी तमाम

मदह में तेरी वो गाते हैं जो गाया हमने''

औलाद के लिए दर्दमन्दाना दुआएं

तूने ये दिन दिखाया महमूद पढ़ के आया

दिल देख कर ये एहसां तेरी सना में गाया

सद शुक्र है ख़ुदाया सद शुक्र है ख़ुदाया

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मैयाँ रानी

ये तीन जो पिसर हैं तुझ से ही ये समर हैं
ये मेरे बारो बर है तेरे ग़ुलामें दर हैं
तू सच्चे वादों वाला मुन्किर कहाँ किधर है

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मय्या रानी

कर इन को नेक किस्मत दे इन को दीनो दौलत
कर इनकी ख़ुद हिफ़ाज़त हो उन पे तेरी रहमत
दे रुशाद और हिदायत और ऊमर और इज़्ज़त

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मैय्या रानी

लखते जिगर है मेरा महमूद बन्दा तेरा
दे उसको उमरो दौलत कर दूर हर अन्धेरा
दिन हों मुरादों वाले पुर नूर हो सवेरा

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मैय्या रानी

इसके हैं दो बरादर उनको भी रखियो ख़ुशतर
तेरा वशीर अहमद तेरा शरीफ़ असग़र
कर फ़ज़ल सब पे यकसर रहमत से कर मुअत्तर

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मैय्या रानी

अहले वक़ार होवें फ़ख़रे दयार होवें
हक़ पर निसार होवें मौला के यार होवें
बाब्रगो बार होवें इक से हज़ार होवें

ये रोज़ कर मुबारक सुबहाना मैय्या रानी

ख़ुदाया तेरे फ़ज़लों को करूं याद

बशारत तूने दी और फिर यह औलाद

कहा हरगिज़ नहीं होंगे यह बरबाद

बढ़ेंगे जैसे बाग़ों में हों शमशाद

ख़बर मुझको ये तूने बार हा दी

फ़सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

बशारत दी के इक बेटा है तेरा

जो होगा एक दिन महबूब मेरा

करूंगा दूर इस मह से अन्धेरा

दिखाऊँगा कि इक आलम को फेरा

बशारत क्या है एक दिल की ग़िज़ा दी

फ़सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

हमारा ख़ुदा

(हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सानी र.अ.अ.)

मेरी रात दिन बस यही इक दुआ है

के इस आलमे कौन का इक ख़ुदा है

उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को

सितारों को सूरज को और आसमाँ को

वो है एक उसका नहीं कोई हमसर

वह मालिक है सब का वो हाकिम है सब पर

हर इक शैको रोज़ी वो देता है हर दम

ख़ज़ाने कभी उसके होते नहीं कम

वो ज़िन्दा है और ज़िन्दगी बख़शता है

वो क़ाइम है हर एक का आसरा है

कोई शै नज़र से नहीं उससे मख़फ़ी

बड़ी से बड़ी हो के छोटी से छोटी

दिलों की छुपी बात भी जानता है

बुरों और नेकों को पहचानता है

वह देता है बन्दों को अपने हिदायत

दिखाता है हाथों पे उनकी करामत

है फ़रयाद मज़लूम की सुननेवाला
सदाकत का करता है वह बोल बाला

गुनाहों को बख़शिश से है ढाँप देता
ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता

यही रात दिन अब तो मेरी सदा है
ये मेरा फ़ुदा है यह मेरा ख़ुदा है

अल्ला मियाँ का ख़त
(हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब र.अ.अ.)

कुरआन सब से अच्छा कुरान सबसे प्यारा
कुरआन दिल की कुव्वत कुरआन है सहारा

अल्ला मियाँ का ख़त है जो मेरे नाम आया
उसतानी जी पढ़ाओ जल्दी मुझे सिपारा

पहले तो नाज़रे से आँखें करूंगी रौशन
फिर तरजमा सिखाना जब पढ़ चुकूं मैं सारा

मतलब न आये जब तक क्यूंकर अमल है मुमकिन
बे तरजमे के हरगिज़ अपना नहीं गुज़ारा

या रब तू रहम करके हमको सिखा दे क़ुरआँ
हर दुख की ये दवा हो हर दर्द का हो चारा

दिल में हो मेरे ईमान सीने में नूरे फ़ुरक़ाँ
बन जाऊँ फिर तो सचमुच मैं आसमाँ का तारा

नोट :- यह बहुत ही अच्छी और प्यारी नज़म हज़रत डाक्टर साहिब ने अपनी बच्ची हज़रत सय्यदा उम्मेमतीन मरयम सदीका साहिबा (पत्नी हज़रत

ख़लीफ़ातुल मसीह सानी र.अ.अ. व सदर लजना इमाउल्लाह (प्रकज़्या) के लिए उनके बचपन के ज़माने में लिखी थी।

अहमदी बच्ची की दुआ

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब र.अ.अ.

इलाही मुझे सीधा रस्ता दिखादे

मेरी ज़िन्दगी पाक तय्यब बना दे

मुझे दीनो दुनिया की ख़ूबी अता कर

हर इक दर्द और दुख से मुझको शिफ़ा दे

ज़ुबाँ पर मेरी झूठ आये न हरगिज़

कुछ ऐसा सबक रास्ती का पढ़ा दे

गुनाहों से नफ़रत बदी से अदावत

हमेशा रहें दिल में अच्छे इरादे

हर इक की करूँ ख़िदमत और ख़ैरख़्वाही

जो देखे वो ख़ुश होके मुझको दुआ दे

बड़ों का अदब और छोटों पे शफ़क़त

सरासर मुहब्बत की पुतली बना दे

बनूँ नेक और दूसरों को बनाऊँ

मुझे दीन का इल्म इतना सिखा दे

ख़ुशी तेरी हो जाये मक़सूद अपना

कुछ ऐसी लगन दिल में अपनी लगा दे

ग़िना दे सख़ा दे हया दे वफ़ा दे

हुदा दे तक़ा दे लिक़ा दे रिज़ा दे

मेरा नाम अब्बा ने रखा है मरयम

ख़ुदाया तू सिददीका मुझको बना दे

दसवां अध्याय
ख़िलाफ़त का बाबरकत निज़ाम

अल्लाह तआला की ओर से भेजे जाने वालों की मृत्यु के पश्चात् उनके कार्य को चलाने के लिए अल्लाह उनके स्थान पर उनका उत्तराधिकारी नियुक्त कर देता है जिसे ख़लीफ़ा कहते हैं। ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है। इसलिए ख़लीफ़ा को उसकी पदवी से कोई नहीं हटा सकता। उसकी आज्ञा का पालन करना अत्यावश्यक है। ख़ुदा ख़लीफ़ा की सहायता तथा मदद करता है। इस लिए उसकी आज्ञा का पालन करने से उन्नति तथा बरकत मिलती है। मुसलमानों में जब तक ख़लीफ़ा का युग रहा वे उन्नति करते रहे। जब उन्होंने ख़िलाफ़त का सम्मान न किया तो ख़िलाफ़त मिट गई तो फिर उनकी स्थिति ख़राब होती चली गई। यदि हम ख़िलाफ़त का सम्मान करेंगे तथा ख़लीफ़ा की आज्ञाओं का पालन करेंगे तो ख़ुदा इस "नेअमत" (ख़ुदा की दी हुई प्रत्येक वस्तु को नेअमत कहते हैं) को सदा कायम रखेगा तथा हम दिन दुगनी रात चौगनी उन्नति करते चले जायेंगे। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें इस नेअमत का सम्मान करने तथा सदा इसकी बरकतों का लाभ उठाने की शक्ति दे (आमीन) अहमदी बच्चों को ख़िलाफ़त के बारे में अहमदिया जमाअत के दूसरे ख़लीफ़ा की यह वसिय्यत सदा याद रखनी चाहिए।

"मेरी यह अन्तिम शिक्षा है कि सब बरकतें ख़िलाफ़त में हैं। नबुव्त एक बीज होती है जिसके पश्चात ख़िलाफ़त इसके असर को संसार में फैला देती है तुम ख़िलाफ़त की सच्चाई को मज़बूती से पकड़ो तथा इसकी बरकत को संसार पर स्पष्ट करो"

(अल्फ़ज़ल 20 मई 1959 ई.)

भाग दूसरा
पहला अध्याय
जमाअतेअहमदिय्या की विशेषताएं

(1) अहमदियों तथा ग़ैर अहमदियों में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि ग़ैर अहमदी मुसलमानों में बहुत से ऐसे सिद्धान्त फैल गए हैं जो हमारी आस्था के अनुसार इस्लाम तथा क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा के विरुद्ध है ! अहमदी मुसलमान इन सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करते ! केवल उन सिद्धान्तों को सच्चा मानते हैं जो क़ुरआन शरीफ़ तथा नबी करीम सल्लल्ललाहो अलैहे वसल्लम की शिक्षा के अनुसार हैं।

(2) ग़ैर अहमदी मुसलमानों में यह विश्वास है कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर लोगों ने अत्याचार किए तथा उन्हें मारने के लिए सूली पर चढ़ा दिया तो ख़ुदा ने उन्हें अत्याचार से बचाने के लिए जीवित आकाश पर उठा लिया जहां वह अब भी जीवित हैं। वास्तविक्ता यह है कि यह बात इसाइयों ने मुसलमानों में फैला दी है।

परन्तु जमाअते अहमदिय्या इस सिद्धान्त को क़ुरआन शरीफ़ की शिक्षा के बिल्कुल विरुद्ध समझती है इस लिए वह इसे नहीं मानती हमारा विश्वास है कि जिस प्रकार दूसरे सभी नबियों का देहान्त हो चुका है। उसी प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का भी देहान्त हो चुका है। सबसे अधिक अत्याचार तो हमारे नबी पाक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर हुए जब ख़ुदा ने आप को इसी संसार में रहने दिया तो हम यह कैसे मान लें कि ख़ुदा ने हज़रत ईसा को अत्याचारों से बचाने के लिए जीवित आकाश पर उठा लिया।

(3) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह सूचना दी थी कि प्रत्येक ईसवी के आरम्भ में इस्लाम की रक्षा करने के लिए ख़ुदा किसी नेक व्यक्ति को संसार में भेजा करेगा जो **मुजद्दिद** कहलाएगा। ग़ैर अहमदी मुसलमानों का यह

विचार है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के युग के पश्चात तेहरवीं सदी ईसवी तक तो मुजद्दिद आते रहे परन्तु चौदहवीं ईसवी में कोई मुजद्दिद न आया । ख़ुदा क्षमा करे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई ।

परन्तु जमाअते अहमदिय्या का यह विश्वास है कि जिस प्रकार पहले मुजद्दिद आते रहे उसी प्रकार इस ईसवी में भी ख़ुदा ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम को मुजद्दिद बना कर भेजा। इसलिए इस ईसवी में भी रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

(4) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह भविष्यवाणी भी की थी कि एक युग में संसार के लोग बहुत ख़राब हो जाएंगे। मुसलमानों में भिन्न-भिन्न प्रकार बुराइयाँ उत्पन्न हो जाएंगी। ईसाई धर्म धार्मिक तथा व्यवहारिक रूप में बहुत बिगड़ जाएगा। परन्तु वह संसारिक रूप में बहुत उन्नति करेंगे तथा नई नई खोजें करेंगे। तब ख़ुदा संसार के लोगों का सुधार तथा इस्लाम धर्म को उन्नति देने के लिए एक विशेष व्यक्ति को भेजेगा जो मसीह मौऊद तथा मेहदी कहलाएगा।

ग़ैर अहमदी मुसलमानों का यह ख़्याल है कि बेशक संसार वास्तिक रूप में बहुत ख़राब हो गया है ईसाई धर्म ने बहुत उन्नति भी कर ली है तथा उन्होंने बहुत नई नई खोजें कर ली हैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की यह सारी भविष्यवाणियां पूरी हुईं परन्तु अभी वह मसीह मौऊद नहीं आया जिसने संसार के लोगों का सुधार करना है। उनका ख़्याल है कि आने वाला मसीह मौऊद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम होंगे जो आसमान पर जीवित मौजूद हैं तथा किसी समय भी संसार में आकर सुधार करेंगे।

परन्तु अहमदिय्या जमाअत का यह कहना है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की अन्य सब बातें पूरी हो गई हैं तो यह नहीं हो सकता था कि मसीहे मौऊद के आने की भविष्यवाणी पूरी न होती। हमारा विश्वास है कि आने वाला मसीहे मौऊद सही समय पर आ चुका है तथा वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

साहब कादियानी अलैहिस्लाम हैं। जिन्हें ख़ुदा ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पूरी पूरी आज्ञा करने की बरकत से यह पदवी (मुक़ाम) दी है। यदि यह स्वीकार कर लिया जाए कि मुसलमानों में तो कोई व्यक्ति इस योग्य नहीं हो सकता कि संसार का सुधार कर सके इस लिए एक दूसरी जाति अर्थात हज़रत ईसा आकर इस संसार तथा मुसलमानों का सुधार करेंगे तो हमारे लिए इस में इस्लाम तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निन्दा है। इस्लाम की शान इसी में है कि हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि आने वाला मसीह मौऊद तथा मेहदी स्वयं मुसलमानों में से होगा तथा उसे यह पदवी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पैरवी करने की बरकत से प्राप्त होगी।

(5) ग़ैर अहमदी मुसलमानों का यह विश्वास है कि प्रत्येक प्रकार की नबूवत सदा के लिए बंद हो चुकी है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पश्चात अब कोई उम्मती (मानने वाले) नबी भी नहीं हो सकता। परन्तु नबूव्वत की अवश्यकता कायम रहेगी। यही कारण है कि जब मुसलमान ख़राब हो जाएंगे तो ख़ुदा एक पुरातन नबी अर्थात हज़रत ईसा को आकाश से भेजेगा। परन्तु अहमदिया जमाअत का विश्वास है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम निसन्देह अन्तिम नबी (ख़ातमुन्नबिय्यीन) हैं परन्तु इस का अर्थ है कि आप सब नबीयों से उच्च तथा सब नबीयों के सरदार हैं निसन्देह किसी दूसरी जाति में से कोई नबी नहीं आ सकता तथा न कोई नई शरीय्यत आ सकती है। परन्तु ऐसे नबी अवश्य आ सकते हैं जो हुज़ूर की पैरवी तथा ग़ुलामी में नबूव्वत प्राप्त करें तथा क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा को संसार में फैलाएं। जब नबूव्वत की ज़रूरत मौजूद है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार संसार में बहुत ख़राबियां उत्पन्न हो चुकी हैं तो यह नहीं हो सकता कि ख़ुदा नबी न भेजे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम शरिय्यत वाले अन्तिम नबी हैं इस लिए अब जो नबी आएगा वह हुज़ूर के मानने वालों में से होगा तथा हुज़ूर ही की ग़ुलामी में कार्य करेगा।

(6) ग़ैर अहमदी मुसलमानों का ख़्याल है कि निसन्देह ख़ुदा पहले ज़माने में अपने बन्दों , बातें किया करता था। उन्हें आने वाले समय में होने वाली बातें भी बताता था। परन्तु अब उसने अपने बन्दों से बातें करना तथा भविष्यवाणी करने का सिलसिला सदा के लिए बन्द कर दिया है।

परन्तु हमारा यह विश्वास है कि ख़ुदा पहले की भान्ति अपने बन्दों पर भविष्यवाणियां करता है तथा उनसे बातें करता है तथा उन्हें आने वाले समय में होने वाली घटनाओं की सूचना देता है।

(7) ग़ैर अहमदी मुसलमानों में यह ग़लत विश्वास भी पाया जाता है कि क़ुरआन शरीफ़ संसार की अन्तिम शरिय्यत है तथा यह प्रत्येक प्रकार की समपूर्ण तथा उच्चतम पुस्तक है परन्तु इसकी कई आयतें तथा संदेश रदद् हो चुके हैं जिन पर चलना अब आवश्यक नहीं रहा। यह विश्वास रखने का अर्थ तो यह है कि क़ुरआन शरीफ़ की किसी आयत का भी विश्वास नहीं है तथा प्रत्येक आयत के सम्बन्ध में यह ख़्याल दिल में उत्पन्न हो सकता है कि शायद यह आयत रदद् हो चुकी है।

हमारा विश्वास यह है कि क़ुरआन शरीफ़ की कोई आयत तथा आदेश ऐसा नहीं जो रदद् हो चुका हो। क़ुरआन शरीफ़ पर आरम्भ से अन्त तक चलना आवश्यक है तथा कयामत तक इसका कोई आदेश रदद् नहीं होगा।

(8) मुसलमानों में विवाह, मृत्यु तथा कई अवसरों पर भिन्न भिन्न प्रकार की रस्में मनाई जाती हैं। जो इस्लाम की शिक्षा के बिल्कुल विरुद्ध है। अहमदी इन सभी रस्मों से बचते हैं तथा इस्लाम की सही शिक्षा पर चलने का प्रयत्न करते हैं। वह केवल ज़ुबान से ही मुसलमान होने तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत होने का दावा नहीं करते बल्कि इन सब बातों पर चलने का प्रयत्न भी करते हैं, जो क़ुरान शरीफ़ ने बताई हैं तथा उन बातों से बचते हैं जिन से बचने की हमारे रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शिक्षा दी है तथा सारे संसार में इस्लाम धर्म का प्रचार करतें हैं तथा इसे फैलाने का प्रयत्न करते हैं।

(9) अहमदिय्या जमाअत ख़िलाफ़त के निज़ाम (कानून) द्वारा एक हाथ में एकत्रित हो गई है तथा इसे ख़िलाफ़त की बहुत सी बरकतें प्राप्त हैं वह ख़लीफ़ा के आदेश उसका पालन करना अपना कर्तव्य समझती है उसी की आज्ञा के कारण से एक जुट तथा एकत्रित हो कर इस्लाम की उन्नति के लिए बलिदान करते हैं।

ग़ैर अहमदी मुसलमानों का कोई ऐसा इमाम नहीं जिसके आदेश का पालन करना वह अपना कर्तव्य समझें। इसका परिणाम यह है कि आपस में भी उनके झगड़े तथा विचारों में अन्तर रहता है तथा एकत्रित हो कर इस्लाम की उन्नति के लिए कोशिश नहीं कर सकते।

दूसरा अध्याय

अल्लाह तआला की सिफ़ात (गुण)

अल्लाह तआला सभी विशेषताओं का स्वामी तथा प्रत्येक प्रकार के नकाएस (कमी) से पवित्र है। वह सभी विशेषताओं का स्वामी है तथा उसमें किसी प्रकार का दोष तथा साझी नहीं है। उसकी कोई कमज़ोरी नहीं न उसका कोई पुत्र है न उसकी कोई पत्नी है। वह किसी का अधीन नहीं तथा अन्य सभी उसके अधीन हैं। उसी ने हमको जन्म दिया। वही हमारा पालन पोषण करता है तथा प्रत्येक प्रकार का रिज़क देता है। वह सदा से जीवित है तथा सदा जीवित रहेगा। वह न सोता है न ऊंघता है। वह आकाश तथा धरती का तथा उनकी प्रत्येक वस्तुओं का स्वामी है। वह प्रत्येक समय हमें देखता है हमारी सभी सपष्ट तथा गुप्त कर्मों को हमारे विचारों तथा इच्छाओं का ज्ञानी है। उसी ने हमें जीवित किया तथा वही हमें मृत्यु देगा हमारे नेक कर्मों का बदला देगा तथा दुष्ट कर्मों का दण्ड देगा। वह नेक लोगों की सहायता करता है तथा हमें माता पिता से भी अधिक प्रेम करता है। वही उपासना के योग्य है। हमें चाहिए कि चाहे कोई दुख या ख़ुशी हो हर समय उसके सामने झुकें। जो कुछ चाहिए हो उसी से मांगो। क़ुरआन शरीफ़ ने अल्लाह तआला

के बहुत से नाम बताए हैं। जो उसकी विशेषताओं को सपष्ट करते हैं। उन नामों को " **अस्माए हुसनह**" कहते हैं। कुछ प्रसिद्ध "अस्माए हसनाह" इस प्रकार है।

अल्लाह तआला की सिफ़ात "अस्माए हस्ना"

अल्लाह ,ख़ुदा का ज़ाती नाम है, अलरब्बो, पालन पोषण करने वाला, अर्रहमानो, बहुत ही दया वाला, अर्रहीमो, बहुत मेहरबान, अलमलेको, बादशाह, अलकुद्दूसो, पवित्र ज़ात, अस्सलामो, स्लामती वाला, अलमोअमेनो, शान्ति देने वाला, अलमुहैमेनो, देख भाल करने वाला, अलअज़ीज़ो, ग़ालिब, अलजब्बारो, ज़बरदस्त, अलमुतकब्बेरो, उन्नति वाला, अलख़ालेको, जन्म देने वाला, अलबारेओ, पैदा करने वाला,अलमुसव्वेरो, रूप बनाने वाला, अलग़फ़्फ़ारो, क्षमा करने वाला, अलवह्हाबो, बहुत बड़ा दानी, अलरज़्ज़ाको, रोज़ी देने वाला, अलअलीमो, ग्यानी, अलबसीरो, देखने वाला, अलहकमो, न्याय करने वाला, अलग़फ़ूरो, क्षमा करने वाला, अश्शकूरो, कदर करने वाला, अलहफ़ीज़ो, रक्षा करने वाला, अलमुजीबो, क़बूल करने वाला, अलहकीमो,हिकमत वाला, अलमतीनो, शक्तिशाली , अलमोहयी ज़िन्दा करने वाला, अलमुमीतो,मारने वाला,अलहय्यो, ज़िन्दा, अलकय्यूमो,सब का सहारा, अलवाहेदो, अकेला,

तीसरा अध्याय

कुछ मसनून प्रार्थनायें

भोजन आरम्भ करने की प्रार्थना

बिस्मिल्लाहे व अला बाराकातिल्लाहे।

अनुवाद :- अल्लाह तआला का नाम लेकर तथा उसकी बरकत मांगते हुए मैं भोजन आरम्भ करता हूं।

भोजन करने की पश्चात की प्रार्थना

अलहम्दो लिल्ला हिल्लज़ी अतअमना वसकाना वजअलना मिनल मुस्लेमीन।

अनुवाद :- सभी प्रशंसाए अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हमें खिलाया पिलाया तथा मुसलमान बनाया।

बीमार के लिए प्रार्थना

अज़हेबिलबास रब्बन्नास वशफ़े अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाओ इल्ला शिफ़ाओका शिफ़ाअन लायुग़ादेरो सकमन।

अनुवाद :- ऐ लोगो के रब ! इस बिमारी को दूर कर ! तू ही अच्छा करने वाला है तेरे अतिरिक्त कोई अच्छा करने वाला नहीं परन्तु वह जो कि तेरी ही ओर से है ! वह सेहत तन्दरुस्ती दे जो ज़रा भी बीमारी न छोड़े।

रात को सोने की प्रार्थना

अल्लहुम्मा बेइस्मेका अमूतो व अहया अल्लहुम्मा अस्लम्तो नफ़सी एलैका व वज्जहतो वजहेया एलैका व फ़व्वज़तो अमरी एलैका व अलजाअतो ज़हरी एलैका रग़बतन व रहबतन एलैका ला मलजाआ वला मनजा मिन्का इल्ला इलैका आमन्तो बेकिताबेकल्लज़ी अन्ज़लता व नबिय्येकल्लज़ी अरसलता।

अनुवाद :- ए अल्लाह तआला ! मैं तेरे नाम से मरता हूं तथा जीवित होता हूं। ए अल्लाह तआला ! मैंने अपनी जान तुझे सौंपी। मैंने अपना मुंह तेरी ओर किया तथा अपना मामला तुझे सौंपा तथा तुझे अपना सहारा बनाया। आशां तथा भय से तेरे सिवा नहीं कोई शरण तथा तुझी से मुक्ति प्राप्त है। मैं तेरी पुस्तक पर आस्था रखता हूं जो तूने भेजी। तेरे नबी (अवतार) पर भी विश्वास किया जिसको तूने भेजा।

जनाज़े की प्रार्थना

<u>अल्ला हुम्मग़फ़िर</u>

हे अल्लाह बख़्श दे

لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا

<u>ले हय्येना व मय्यतेना</u>

हमारे जीवितों को और जो मर गये हैं

وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا

<u>व शाहिदिना व ग़ाइबिना</u>

और जो हाज़िर हैं और जो हमारे बीच मौजूद नहीं

وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا

<u>व सग़ीरिना व कबीरिना</u>

हमारे छोटों को और हमारे बड़ों को

وَذَكَرِنَا وَاُنْثٰنَا

<u>व ज़-करिना व उनसाना</u>

हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا

<u>अल्ला हुम्मा मन अहयय्तहू मिन्ना</u>

हे अल्लाह जिसे तू हम में से जीवित रखे

فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ

<u>फ़अह यिही अलल् इस्लाम</u>

तो उसे इस्लाम पर जीवित रख

وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا

<u>वमन तवफ़्फ़ैतुहू मिन्ना</u>

और जिसे तू हम में से मृत्यु देदे

فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

<u>फ़तवफ़्फ़हू अलल ईमान</u>

तो उसी ईमान के साथ मृत्यु दे

اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ

<u>अल्ला हुम्मा ला तहरिम्ना अजरहू</u>

हे अल्लाह उसके सवाब (फल) से हमें वंचित न रख

وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ

वला तफ़्तिन्ना बाअदहू

और इसके बाद हमें किसी झगड़े या क्लेश में न डाल

सफ़लता के सामान पैदा होने की प्रार्थना

रब्बाना आतेना मिल्लादुन्का रहमतन व हय्यिल्लना मिन अमरेना राशादा रब्बिश्शरहली सदरी व यस्सिरली अमरी।

अनुवाद :- ए हमारे रब ! अपनी दया तथा कृपा से मेरे कार्य के लिए सफ़लता का मार्ग बना दे। मेरा सीना खोल दे तथा मेरे कार्य को मेरे लिए आसान बना दे।

चौथा अध्याय

हज़रत रसूले पाक स.अ.व का पवित्र आचरण

हमारे रसूले पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में ख़ुदा ने सारे गुण एकत्रित कर दिए थे। प्रत्येक कार्य में आप हमारे लिए उच्च उदाहरण हैं। हमें चाहिए कि हम आप के गुणों को अपनाने का प्रयत्न करें ताकि अल्लाह तआला हम से प्रसन्न रहे।

सच्चाई : इस्लाम का आदेश है कि सदा सच बोलो। कितनी ही हानि की शंका हो फिर भी झूठ मत बोलो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बचपन से ही सच बोलने में मशहूर थे जब ख़ुदा ने आपको नबी (अवतार) बनाया तो आपने एक पहाड़ी पर चढ़ कर मक्का के लोगों कों एकत्रित किया तथा कहा :- ऐ लोगो यदि मैं तुम्हें कहूं कि इस पहाड़ी के पीछे एक बहुत बड़ी सेना खड़ी है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है तो क्या तुम मेरी इस बात पर विश्वास करोगे ? सब लोगों ने एक साथ कहा :-"हां हम आप की इस बात पर अवश्य विश्वास करेंगे"

क्योंकि हमने आप को बचपन से ही कभी न झूठ बोलते देखा न सुना।

वाअदा पूरा करना :- आप जो वाअदा करते थे, उसे अवश्य पूरा करते थे। बदर के युद्ध में आपके साथ केवल (313) व्यक्ति थे, काफ़िर एक हज़ार थे। इस लिए आप को और व्यक्तियों की आवश्यकता थी। उस समय दो मुसलमान आपकी सेवा में प्रस्तुत हुए। उन्होंने कहा कि हम मक्का से आए हैं। मार्ग में हमें काफ़िरों ने पकड़ लिया था उन्होंने हमें इस वाअदा पर छोड़ा है कि हम युद्ध में मुसलमानों की ओर से नहीं लड़ेंगे। परन्तु यह वाअदा हमने विवशतापूर्वक किया था। हुज़ूर हमें लड़ने की आज्ञा दें। हुज़ूर ने कहा की यह बिल्कुल नहीं हो सकता। निसन्देह हमें और व्यक्तियों की बहुत आवश्यकता है परन्तु तुमने जो वाअदा किया है उसे अवश्य पूरा करो।
इस लिए हुज़ूर ने उन्हें लड़ने की आज्ञा नहीं दी।

दया :- हुज़ूर मित्रों, शत्रुओं, बूढ़ों, बच्चों, स्त्रियों तथा पुरुषों सब पर दया करते थे, बल्कि पक्षियों तथा पशुओं पर भी दया करते थे। एक बार हुज़ूर ने कहा जब मैं नमाज़ आरम्भ करता हूं तो यह सोच कर आरम्भ करता हूं कि लम्बी नमाज़ पढ़ाऊँ, परन्तु पीछे से किसी बच्चे की रोने की आवाज़ आ जाती है इस लिए मैं बच्चे का ध्यान करते हुए नमाज़ छोटी कर देता हूं। हज़ूर स्त्रियों तथा बच्चों पर विशेष रूप से दया करते थे।

अरब देश में यह रिवाज था कि यदि किसी के घर में कोई लड़की का जन्म हो जाता तो उसे जीवित धरती में दबा देते थे आप ने कठोरता से इसका विरोद्ध किया आप ने कहा यह एक बहुत बड़ा पाप है अरब में यह रिवाज था कि जीवित पशुओं की टांग से थोड़ा सा मांस काट लेते तथा उसे भून कर खा लेते इस लिए बिचारे पशुओं को कष्ट होता था हुज़ूर ने इससे भी मना किया।

माता पिता की सेवा तथा उनकी आज्ञा का पालन-:
हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से एक आदमी ने पूछा :- मैं सबसे अच्छा व्यवहार किस के साथ करूं ? हुज़ूर ने कहा अपनी मां के साथ करो।

उसने पूछा इसके पश्चात मैं सबसे अच्छा व्यवहार किस के साथ करूं हुज़ूर ने कहा अपनी मां के साथ करो।

उसने तीसरी बार फिर यही प्रशन किया :- हुज़ूर ने फिर यहीं उत्तर दिया अपनी मां के साथ करो।

जब उसने चौथी बार प्रशन किया :- मां के पश्चात सबसे अच्छा व्यवहार किस के साथ करूं ? हुज़ूर ने कहा :- अपने बाप के साथ करो। इससे आप स्वयं सोच सकते हैं कि हुज़ूर माता पिता की सेवा तथा उनकी आज्ञा के पालन को बहुत आवश्यक समझते थे वास्तव में हज़ूर ने यह शिक्षा इस लिए दी कि जहां अल्लाह तआला ने ख़ुद अपने आदेशों का पालन करने को कहा है वहां साथ ही माता पिता की सेवा तथा उनकी आज्ञा के पालन को आवश्यक ठहराया है इस लिए ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में कहा है :-

"ए लोगो। केवल अपने ख़ुदा की उपासना करो तथा उसके साथ किसी को शामिल न करो तथा माता पिता के साथ भलाई तथा उनकी आज्ञा का पालन करो"

बचपन में हुज़ूर के माता पिता का देहान्त हो गया परन्तु हुज़ूर के चाचा अबु तालिब तथा दाई हलीमा को अपने माता पिता की भान्ति समझते थे। उनका बहुत सम्मान करते थे। उनकी आज्ञा का पालन करते थे। तथा उनकी सेवा करते थे।

पाचवां अध्याय

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्लाम का पवित्र सुभाव

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्लाम रसूले पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत प्रेम करते थे।

एक बार पण्डित लेखराम ने (जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताखियां किया करता था) आप को सलाम किया आपने

मुंह दूसरी ओर कर लिया उसने फिर आपको सलाम किया, आपने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया।

तत्पश्चात जब पण्डित लेख राम के बारे में बातें हुईं कि पण्डिंत लेखराम ने आप को सलाम कियां था तो आपने क्रोधित हो कर कहा :- जो व्यक्ति हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को गालियाँ देता है तो हम उसके सलाम का उत्तर कैसे दे सकते हैं।

हुज़ूर की यह आदत थी कि छोटी से छोटी बात में भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नमूने पर चलने का प्रयत्न करते थे।

मेहमान नवाज़ी :- हुज़ूर के पास जो मेहमान आते थे हुज़ूर उनके लिए विशेष प्रकार का भोजन बनवाते थे तथा उनके विश्राम की व्यवस्था करते। हुज़ूर के एक साथी ने बताया कि एक बार मैं कादियान आया हुआ था रात के बारह बजे किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, जब बाहर आया तो देखा कि हुज़ूर के एक हाथ में दूध का गिलास है दूसरे हाथ में लैम्प पकड़ा हुआ है। हुज़ूर ने कहा :- ''कहीं से दूध आया था मैं आप के लिए लाया हूं''

''इमानदारी'' एक बार हुज़ूर कादियांन के उत्तर की ओर सैर के लिए गए। मार्ग में एक खेत के किनारे छोटा सा बेर का पेड़ था तथा उसमें बेर लगे हुए थे। एक व्यक्ति ने देखा कि बहुत बढ़िया और पका हुआ बेर पेड़ के नीचे गिरा पड़ा है उसने उसे उठा कर खाना चाहा। जब हुज़ूर ने देखा तो कहा :-''यह बेर मत खाओ। जहां से उठाया है वहीं पर रख दो, निसन्देह इसका कोई मालिक होगा तथा मालिक की आज्ञा के बिना इसे खाना उचित नहीं''।

''सफ़ाई'' हुज़ूर सफ़ाई का बहुत ध्यान रखते थे। आप सादा परन्तु साफ़ सुथरे कपड़े पहनते थे। दांत साफ़ करने के लिए कीकर की लकड़ी की दातुन इस्तेमाल करते थे। हुज़ूर के एक साथी ने बताया :- ''कि मैंने हुज़ूर के उतरे हुए कपड़ों को नाक के साथ लगा कर सूंघा, मुझे कभी भी उनमें से पसीने की बदबू नहीं आई'' इसका कारण यही है कि हुज़ूर कपड़ों की सफ़ाई का बहुत ख़्याल रखते

थे।

"अस्सलामो अलैकुम कहना" हुज़ूर के एक करीबी साथी ने बताया कि हुज़ूर एक बार **मस्जिद मुबारक** में बैठे थे। एक कार्य के सम्बन्ध में थोड़े थोड़े समय पश्चात आप को उठ कर घर जाना पड़ता था। जब भी हुज़ूर उठते तो अस्सलामो अलैकुम कह कर अन्दर जाते तथा बाहर आ कर फिर अस्सलामो अलैकुम कहते थे।

किसी को तू न कहते थे :- हुज़ूर की यह आदत थी कि निसन्देह कोई छोटा या बड़ा हो, हुज़ूर किसी को "तू" न कहते थे। एक साथी ने बताया कि मैं छोटा बच्चा था तथा प्रतिदिन हुज़ूर के घर जाता था परन्तु हुज़ूर ने कभी भी मुझे "तू" कह कर नहीं बुलाया।

अपने हाथों से स्वयं कार्य करना :- हुज़ूर घर के कार्य में भी भाग लिया करते थे। स्वयं चारपाईयां बिछाते तथा बिस्तर लगाते थे। यदि अचानक वर्षा हो जाए तो छोटे बच्चे जो चारपाईयों पर सोते रहते। हुज़ूर एक ओर से स्वयं उनकी चारपाईयां पकड़ते तथा दूसरी ओर से कोई दूसरा पकड़ लेता था इस प्रकार स्वयं उनकी चारपाईयां अन्दर करवा लेते थे। यदि कोई मेहमान होता तो कई बार स्वयं उनके लिए खाना उठा कर अन्दर ले जाते, तथा स्वयं उनके साथ भोजन करते थे।

छठा अध्याय

धर्म (दीन) की कुछ अनिवार्य बातें

ख़ाना काअबा :- संसार में 'ख़ाना काअबा' पहला ख़ुदा का घर है। यह सभी मुसलमानों का मुख्य केन्द्र तथा सबसे पवित्र स्थान है। यह वही स्थान है जहां प्रतिवर्ष मुसलमान एकत्रित हो कर "हज" करते हैं। आज से साढ़े चार हज़ार वर्ष पूर्व हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके पुत्र इस्माईल अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की आज्ञा से "ख़ाना काअबा" को उपासना का स्थान बनाया। प्रारम्भ में इस

के इर्द गिर्द कोई आबादी नहीं थी परन्तु तत्पश्चात इस स्थान पर एक नगर बस गया जिसका नाम **मक्का मुअज़्ज़मा** पड़ा। यह वही स्थान् है जहां हमारे प्यारे आका रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जन्म हुआ।

क़िबला :- क़िबला का अर्थ सामने तथा आगे के हैं। ख़ुदा का आदेश है कि मुसलमान जब भी नमाज़ पढ़े अपना मुख तथा अपना ध्यान ख़ाना कआबा की ओर इस तरह रखे कि ख़ाना काअबा उनके सामने है। जिस की ओर ध्यान करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

अज़वाजे मुतह्हरात :- रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पत्नियों को ''अज़वाजे मुतह्हरात'' कहते हैं कुछ अज़वाजे मुतह्हरात के नाम इस प्रकार हैं :-

हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाहो अन्हा, हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहो अन्हा, हज़रत ज़ैनब रज़ि अल्लाहो अन्हा, हज़रत सौदाह रज़ि अल्लाहो अन्हा, हज़रत हफ़साह रज़ि अल्लाहो अन्हा, हज़रत उम्मे हबीबाह रज़ि अल्लाहो अन्हा।
हुज़ूर की अज़वाज को **''उम्मा हातुल मोमेनीन''** भी कहते हैं जिसके अर्थ हैं मोमिनों की माताएं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सन्तान :- हुज़ूर के यहां चार पुत्रों का जन्म हुआ। इब्राहीम, क़ासिम, ताहिर, और तय्यब तथा चार पुत्रियों का जन्म हुआ। ज़ैनब रज़ि अल्लाहो अन्हा, रुकइया रज़ि अल्लाहो अन्हा, उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहो अन्हा, फ़ातिमा तुज़्ज़ुहराअ रज़ि अल्लाहो अन्हा।

चारों पुत्रों का छोटी आयु में ही देहान्त हो गया। लड़कियों में हुज़ूर की सबसे छोटी पुत्री हज़रत फ़ातिमा थीं जो हुज़ूर की सबसे प्यारी थीं। उनका विवाह हज़रत अली रज़ि अल्लाहो अन्हो के साथ हुआ। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहो अन्हो आप के ही पुत्र थे। हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहो अन्हो कर्बला की घटना के समय शहीद हो गए।

ग़जवाते नब्वी :- हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मक्का के काफ़िरों के साथ जो धर्म युद्ध करने पड़े उन्हें "ग़ज़वात" कहते हैं। कुछ प्रसिद्ध धर्म युद्धों के नाम इस प्रकार हैं। बदर का युद्ध, ओहद का युद्ध, तबूक का युद्ध, हुनैन का युद्ध।

सुन्नत और हदीस :- रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने जीवन में जो कार्य किए उन्हें सुन्नत कहते हैं तथा जो बातें हुज़ूर ने कहीं उन्हें हदीस कहते हैं यह बातें जिन पुस्तकों में एकत्रित की गई हैं उन्हें हदीस की पुस्तक कहते हैं हदीस की सबसे मशहूर पुस्तक का नाम **"सहीह बुख़ारी"** है।

कुरआन, सुन्नत और हदीस :- सब से पहला स्थान क़ुरआन शरीफ़ का है इस के पश्चात सुन्नत तथा इसके पश्चात हदीस का स्थान है।

इस्लाम के क़मरी (चांद) महीनों के नाम :- मोहररम, सफ़र रबी-उल-अव्वल, रबी-उल-सानी, जमा-दिउल अव्वल, जमा-दिउल-सानी, रजब, शअबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़िलकअदा, ज़िल हज्जा यह महीने क़मरी महीने कहलाते हैं। मुसलमानों का सन **"सने हिजरी"** कहलाता है क्यों कि रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिजरत से यह साल आरम्भ हुआ।

हिजरी शमसी महीनों के नाम और उनके नामकरण की वजा

जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत ख़लीफ़ा तुल मसीह सानी दूसरे ख़लीफ़ा ने महीनों के जो नाम रखे हैं वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पवित्र जीवन चरित्र के बारे में बारह महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित हैं यह घटनाएं ऐसा दृष्टिकोण रखती हैं जिस के इर्द गिर्द इस्लामी इतिहास चक्कर लगा रहा है।

लोगों के अधिक ज्ञान तथा उनके लाभ के लिए इन महीनों के नाम तथा नाम रखने का कारण संक्षेप शब्दों में बताया गया है हमें आशा है कि जमाअत के लोग हुज़ूर के इस ख़ास अविष्कार को हुज़ूर की इच्छानुसार अपने हर रोज़ के स्थान देंगे

तथा ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस्लामी कानून को कायम करने में सहायक सिद्ध होंगे ।

सुलह (जनवरी) :- इस शमसी महीना में मक्का के काफ़िरों के साथ **हुदैबिया** के स्थान पर सुलह का समझौता हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि लोग अधिक संख्या में मुसलमान होना शुरु हो गए जिसका नाम अल्लाह तआला ने फ़तहे मुबीन (खुली विजय) रखा।

तबलीग़ (फ़रवरी) :- इस शमसी महीना में हज़रत रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने राजाओं को तबलीग़ी पत्र भिजवाए तथा उन्हें इस्लाम का निमन्त्रण दिया।

अमान (मार्च) :- इस शमसी महीना में आंह हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज्जातुल विदा पर यह घोषणा की थी कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी जानों, मालों व इज़्ज़त आबरु को वैसी ही इज़्ज़त दी है जैसी उसने हज के स्थान मक्का मुअज़्ज़मा तथा हज के महीने को इज़्ज़त दी है।

शहादत (अप्रैल) :- इस शमसी महीना में इस्लाम के शत्रुओं ने दो बार धोखे व गद्दारी से आंह हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के (७७) सतत्तर साथियों को अपने यहां बुला कर बेदर्दी से शहीद कर दिया जो कुरान शरीफ़ के हाफ़िज़ व माहिर (विद्वान) थे।

हिजरत (मई) :- इस शमसी महीना में आंह हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम **मक्का मुअज़्ज़मा** से हिजरत कर के मदीना मुनव्वरा में बस गए।

एहसान (जून) :- इस शमसी महीना में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हातिम ताई के कबीले के कैदियों को उन पर दया करते हुए आज़ाद कर दिया।

वफ़ा (जुलाई) :- इस शमसी महीना में ग़ज़वाए जातिर्रिकाअ हुआ जिसमें आप के साथियों ने बहुत गर्मी में लम्बा पैदल सफ़र कर के अपनी सच्चाई को सिद्ध किया यहां तक कुछ साथियों के पाँव छन्नी हो गए और नाख़ुन झड़ गए। इस मौक़े पर "ख़ौफ़ की नमाज़ का हुक्म उतरा"।

ज़हूर (अगस्त) :- इस शमसी महीना में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अरब से बाहरी देशों में इस्लाम को फैलाया और इस्लाम की सच्चाई को सब धर्मों पर सच्चा साबित कर दिया जब कि मौता के स्थान पर आप के सेवक हारिस बिन उमैर को शहीद कर दिया जिस पर मुसलमानों ने हमला किया जिस में आप के तीन अमीर एक के बाद एक शहीद कर दिए गए।

तबूक (सितम्बर) :- इस शमसी महीना में आंह हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथियों ने **तबूक** की जंग पर अपने इख़लास का भिन्न भिन्न हालतों में नमूना और अपने अपने रंग में विवश इमान के जौहर दिखाए।

इख़ा (अक्तूबर) :- इस शमसी महीना में आंह हज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक मुहाजिर व एक एक अनसार को भाई भाई बना दिया जिस के परिणाम से वह सगे भाइयों से भी ज़्यादा प्रेम करने लगे।

नबूवत (नवम्बर) :- इस शमसी महीना में अल्लाह तआला ने हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को नबी और रसूल बनाया।

फ़तह (दिसम्बर) :- इस शमसी महीना में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा को फ़तह किया अतः इस अवसर पर फ़र्माया आज के दिन तुम पर कोई पकड़ नहीं है कह कर आप ने आम माफ़ी दे दी।

सातवां अध्याय

कुछ आवश्यक वाक्य तथा उनके अर्थ

(1) सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम :- इसका अर्थ है "उन पर अल्लाह तआला की कृपा तथा सलाम हो" ! यह वाक्य केवल हज़रत रसूले पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए ही प्रयोग किया जाता है।

(2) अलैहिस्सलाम :- इसका अर्थ है उन पर अल्लाह तआला की ओर

से सलाम हो। यह वाक्य केवल अल्लाह तआला के नबियों (अवतारों) तथा मामूरों के नामों के साथ प्रयोग किया जाता है।

(3) इन्शाह अल्ला :- इस का अर्थ है "यदि अल्लाह तआला ने चाहा" जब किसी कार्य को करने की इच्छा करो या कोई वाअदा करो तो साथ इन्शाह अल्लाह अवश्य कहो। अर्थात मैं इन्शा अल्लाह अपना वाअदा ज़रूर पूरा करूंगा।

(4) अल्हमदो लिल्लाह :- इसका अर्थ है "सभी प्रशंसाओं का स्वामी केवल अल्लाह ही है" इस वाक्य से ही **सूरते फ़ातिहा** आरम्भ होती है। जब भी किसी वरदान का या किसी ख़ुशी का धन्यवाद करना हो तो अल्हमदो लिल्लाह अवश्य कहते हैं। भोजन करने तथा छींक आने के पश्चात भी अल्हमदो लिल्लाह कहना चाहिए।

(5) यरहामो कोमुल्लाह :- इसका अर्थ है "अल्लाह तआला तुम पर कृपा करे"। जब किसी को छींक आए तो वह अल्हमदो लिल्लाह कहे तो सुनने वाले को चाहिए कि वह यरहामोकोमुल्लाह कहे।

(6) जज़ाकल्लाहो ख़ैरन :- इसका अर्थ है "अल्लाह तआला तुम्हें नेक तथा अच्छा बदला दे"। जब किसी का धन्यवाद करना हो तो "जज़ाकल्लाहो ख़ैरन" कहना चाहिए।

(7) माशा अल्लाह :- इसका अर्थ है "जो कुछ अल्लाह तआला ने चाहा" जब किसी अच्छी चीज़ की प्रशंसा करनी हो तो साथ में माशा अल्लाह कहते हैं।

जैसे :- माशा अल्लाह आप का लड़का बहुत बुद्धिमान है।

(8) इन्ना लिल्लाहे व इन्ना अलैहे राजेऊन :- इसका अर्थ है हम अल्लाह तआला के लिए हैं तथा मृत्यु के पश्चात उसी की ओर लौटना है। यह वाक्य क़ुरआन मजीद में आता है। किसी की मृत्यु की सूचना मिलने पर या मुसीबत में या कोई बुरी सूचना मिलने पर इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है।

आठवां अध्याय
अहमदिया जमाअत के बारे में आवश्यक सूचनाएं

हज़रत मसीहे मौऊद अ.स.की शादी व सन्तान

पहली शादी :- हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की पहली शादी बचपन कें ज़माना के गुज़रने के फ़ौरन बाद आप के माता पिता ने कर दी थी आप की पहली पत्नी का नाम **हुरमत बीबी** था। वह आप के निकट सम्बन्धियों में से थीं। इस शादी से हुज़ूर के यहां दो बच्चे पैदा हुए।

(1) मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद साहिब (2) हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो मिर्ज़ा फ़ज़ल अहमद साहिब का तो जवानी में ही देहान्त हो गया। हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब को अल्लाह तआला ने लम्बी ऊमर दी। आप को ख़िलाफ़तें सानियाँ अर्थात दूसरे ख़लीफ़ा के ज़माना में अहमदिय्यत में शामिल होने का अवसर मिला। आप की सभी औलाद अहमदी हैं।

दूसरी शादी :- आप की दूसरी शादी दिल्ली के एक सम्मानित सय्यद ख़ान दान में १८८४ ई० के अन्त में हुई जो ख़ुदा के फ़ज़ल से बहुत बाबरकत साबित हुई आप की दूसरी पत्नी का नाम नुसरत जहां बेग़म साहिबा था जो जमाअते अहमदिय्या में हज़रत उम्मुल मोमेनीन या हज़रत अम्मा जान के नाम से मशहूर हैं अपने स्वभाव और अच्छे व्यवहार के कारण आप अहमदी औरतों के लिए नमूना थीं। २० अप्रैल १९५२ को रब्वाह में आप का देहान्त हो गया। आप का मज़ार बहिश्ती मक़बरा रब्वाह में है।

आप के पिता का नाम हज़रत मीर नासिर नवाब था। आप के दो भाई हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब तथा हज़रत मीर इस्हाक साहिब जो जमाअते

अहमदिय्या के बहुत बड़े बज़ुर्ग गुज़रे हैं जिन्हें दीन की सेवा करने का ख़ास अवसर मिला।

औलाद :- दूसरी शादी से हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जो औलाद दी उसके बारे में अल्लाह तआला ने बहुत सी ख़ुशख़बरियां दीं और बताया कि वे बहुत नेक, बाबरकत, बा इकबाल और इस्लाम की सेवा करने वाली होगी। हुज़ूर की ज़िन्दा रहने वाली तथा ऊम्र पाने वाली औलाद के नाम यह हैं।

(1) हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल मसीह सानी रज़िअल्लाहो अन्होः- आप अल्लाह तआला की बशारतों के मुताबिक 12 जनवरी 1889 ई० को पैदा हुए। 14 मार्च 1914 को जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा बने तथा 51 वर्ष तक बहुत सफलता पूर्वक ख़िलाफ़त का ज़माना गुज़ारने के बाद 8 नवम्बर 1965 को प्रातः 2 बजकर 20 मिनट पर आप का देहान्त हो गया।

(2) हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो :- अल्लाह तआला की बशारतों के अधीन 20अप्रैल 1893 को आप का जन्म हुआ। आप ने इस्लाम और अहमदिय्यत की बहुत सेवा की आप ख़लीफ़ाए सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो का दाँया हाथ थे। आप को मूल्यवान पुस्तकें तथा लेख लिखने का अवसर मिला। 2 सितम्बर1963 को आप का देहान्त हो गया तथा आप की मज़ार बहिश्ती मक़बरा रब्वाह में है।

(3) हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहब रज़ि अल्लाहो अन्हो :- आप का जन्म भी इलाही बशारतों के अनुसार24 मई 1895 को हुआ। आप को भी इस्लाम की बहुत सेवा करने का अवसर मिला 24 दिसम्बर 1961 को आप का देहान्त हो गया आप की कब्र भी बहिश्ती मक़बरा रब्वाह में है।

(4) हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़ि अल्लाहो अन्हा :- इलाही बशारतों के अधीन आप का भी जन्म हुआ।

अली
आप का विवाह हज़रत नवाब मुहम्मद ख़ान साहिब आफ़ मालेर कोटला से हुआ आप के कीमती मज़मून और नज़में अकसर अहमदी बच्चे पढ़ते होंगे। 22-23 मई 1977 की मध्यरात्रि को आप का देहान्त हो गया तथा बहिश्ती मक़बरा रब्वाह (पाकिस्तान) में आप की कब्र है।

(5) हज़रत नवाब अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ि अल्लाहो अन्हा :- आप भी हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद से थीं। 25 जून 1904 को आप का जन्म हुआ। हज़रत नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहिब के साथ आप का विवाह हुआ 6 मई 1987 को आप का देहान्त हो गया तथा आप की कब्र बहिश्ती मक़बरा (पाकिस्तान) रब्वाह में है।

किताबें :- हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने (80) अस्सी के लगभग किताबें लिखीं जिस में हुज़ूर ने इस्लाम की सच्चाई के ज़बर्दस्त सबूत दिए। अल्लाह तआला के ताज़ा निशान दिखाएं तथा क़ुर्आन शरीफ़ की विशेषताएं बताईं। कुछ प्रसिद्ध किताबों के नाम इस प्रकार हैं।

बराहीने अहमदिय्या, हकीकतुल वही, आईना कमालात-ए-इस्लाम, किश्ती-ए- नूह अल्वसिय्यत, इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी, बरकातुद दुआ, तारयाकुल-कुलूब।

आप के कुछ मशहूर साथियों के नाम :- जमाअते अहमदिय्या के पहले ख़लीफ़ा हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत शेख़ याकूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत मौलवी सय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत मौलवी गुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ि अल्लाहो अन्हो, हज़रत हाफ़िज़ मुख़तार अहमद साहिब शाहजहाँपूरी रज़ि अल्लाहो अन्हो।

कादियाँन तथा इसके पवित्र स्थान :- कादियान जमाअते अहमदिय्या का सदाई केन्द्र तथा पवित्र स्थान है। हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम का जन्म यहीं पर हुआ। आपने जीवन का अधिकतर समय यहीं गुज़ारा यहीं पर आप की कब्र है। जिस मकान में आप रहते थे जिस मस्जिद में आप नमाज़ पढ़ते थे यह सब हमारे लिए बाबरकत हैं यहां के कुछ पवित्र स्थानों के नाम ये हैं :- बहिश्ती मक़बरा, मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक़सा, मिनारतुल-मसीह (यह सुन्दर सफ़ेद मिनारा मस्जिदे अक़सा में है) इसकी नींव हज़रत मसीहे मौऊद लैहिस्सालम ने रखी। यह मसीहे मौऊद के सम्बन्ध में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उस भविष्यवाणी को पूरा करता है कि आने वाला मसीह मौऊद सफ़ेद मिनारा के पास उतरेगा।

बहिश्ती मक़बरा :- अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कब्रिस्तान बनाया था। अल्लाह तआला ने हुज़ूर को बताया था कि केवल वही व्यक्ति इस में दफ़न होगा जो अल्लाह तआला के नज़दीक जन्नती होगा। इस में दफ़न होने के लिए अत्यावश्यक है कि आदमी बुरी संगत से बचे। नमाज़ पढ़े, नेक काम करे तथा अपनी कमाई या सम्पति का कम से कम दसवां हिस्सा चन्दा में दे। इस कब्रिस्तान में हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम, जमाअते अहमदिय्या के पहले ख़लीफ़ा हज़रत हाफ़िज़ मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब और आपके साथियों और दीन की सेवा करने वाले अहमदियों की कब्रें हैं।

दारे हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम :- यह मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के मकानका नाम है। इस में वो कमरे हैं जिस में हुज़ूर इबादत किया करते थे और अपने ख़ुदा से प्रार्थना किया करते थे।

प्रत्येक अहमदी को यह प्रयत्न करना चाहिए कि वह कादियान जा कर इन पवित्र स्थानों का दर्शन कर के अपने ईमान को ताज़ा करे।

दरवेशाने कादियान :- अल्लाह तआला ने दाग़े हिजरत के द्वारा

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को यह सूचना दी थी कि जमाअत के लोगों को भविष्य में कादियान से हिजरत करनी पड़ेगी 1947 में ऐसे हालात हो गए कि अंग्रेज़ों ने देश को आज़ाद करने के साथ ही देश का बंटवारा कर दिया। देश के बटवारे के समय पूर्वी पंजाब में ख़तरनाक किस्म के दंगे फ़साद शुरू हो गए जिस के कारण मुसलमानों को देश छोड़ना पड़ा तथा कादियान भी दंगे फ़साद की लपेट में आ गया तथा जमाअत के लोगों को हिजरत करनी पड़ी क्योंकि कादियान जमाअते अहमदिय्या का केन्द्र है। इस में बहुत से शआएरुल्ला हैं, पवित्र स्थान तथा हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की कब्र यहीं पर है । जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा ने इस की निगरानी और सुरक्षा के लिए कुछ लोगों को यहीं पर ठहरने का आदेश दिया तथा उनके रहने का प्रबन्ध किया इन्हें दरवेशाने कादियान के नाम से जाना जाता है। शुरु में इन दरवेशों की संख्या 313 थी। थोड़े समय तक इन्हें अकेले जीवन गुज़ारना पड़ा। फिर युवकों के विवाह हुए जिन के परिवार उनकी मान मर्यादा तथा सुरक्षा की ख़ातिर बाहर भिजवा दिया गया था वह भविष्य में रहने के उद्देश्य से कादियान वापिस आ गए तथा अब औरतों, मरदों और बच्चों की जनसंख्या बढ़ कर कई हज़ार हो चुकी है ।

क़दियान के तालीमी तथा रिफ़ाही इदारे

इस समय जमाअत के प्रबन्ध के अधीन शिक्षा की तीन संस्थाएं अहमदिय्या आबादी में कायम हैं। तालीम-उल-इस्लाम स्कूल में दसवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है नुसरत गर्ल्ज़ हाई स्कूल में दसवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। नुसरत गर्लज़ कालिज में बी. ए. तक, विशेष धार्मिक शिक्षा के लिए जामिआ अहमदिय्या और मदरसा तुल मुअल्लेमीन क़ायम है जिस में मौलवी फ़ाज़िल तक अरबी की शिक्षा दी जाती है तथा इसके साथ-साथ इस्लाम तथा दूसरे धर्मों के बारे में बताया जाता है तथा इस्लाम के प्रचारक तैयार किए जाते हैं।

अस्पताल :- सदर अन्जुमन अहमदिय्या ने रुपयों की कमी के बावजूद देश के बटवारे अर्थात 1947 से एक ख़ैराती अस्पताल खोल रखा है जो अहमदिय्या अस्पताल के नाम से जाना जाता है 1947 से ले कर अब तक यह अस्पताल इस

प्रत्येक धर्म तथा क़ौम के लोगों का इलाज बहुत हमदर्दी के साथ किया जाता है।

मीनारतुल मसीह, मस्जिद मुबारक, मस्जिद अक़सा, तथा बहिश्ती मक़बरा के दर्शन के लिए बड़ी संख्या में लोग यहां पर आते हैं। इन पवित्र स्थानों को दिखाने तथा अहमदिय्या जमाअत की जानकारी के लिए दफ़्तर **ज़ायरीन** स्थापित है।

नज़ारत दावत-व-तबलीग़ की ओर से इस्लाम व अहमदिय्यत का तबलीग़ी लिट्रेचर गुरमुखी, हिन्दी, उर्दू, इंग्लिश तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रत्येक वर्ष कई लाख पन्नों पर आधारित छपता है तथा कुछ समय पहले इंग्लिश में क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद कर के छपवाया गया है जो ग़ैर अहमदी मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। भारत के बड़े-बड़े महापुरुषों तथा विदेश से आने वाले लोगों को प्राकृतिक उपहार के रुप में भेंट करने का अवसर प्राप्त होता रहता है इस के अतिरिक्त गुरमुखी, हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में भी क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद छप चुका है। कादियान से एक सप्ताहिक पत्रिका **"बदर"** और मासिक उर्दू पत्रिका "मिशकात" और मासिक हिन्दी पत्रिका "राहे ईमान" भी छपते हैं। इस में हुज़ूर के भाषण, तबलीग़ी रिपोर्ट तथा मिशनों के हालत. तहकीकी लेख छपते हैं।

जलसा सालाना :- इस जलसा की नींव हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने रखी। पहला जलसा सालाना 1891 में कादियान में हुआ इसमें केवल 75 व्यक्ति शामिल हुए तथा 1892 के जलसा सालाना में 1327 व्यक्ति शामिल हुए। इसके पश्चात इसकी संख्या लगातार बढ़ती ही गई 1983 में रब्वाह में यह जलसा सालाना हुआ तो इसमें अढ़ाई लाख अहमदी शामिल हुए। न केवल पाकिस्तान तथा भारत बल्कि विश्व के अन्य देशों से भी अहमदी लोग इस में बढ़े चाव से शामिल होते हैं। पहले यह जलसा केवल कादियान में होता था परन्तु अब यह कादियान तथा रब्वाह दोनों स्थानों पर होता है परन्तु अधिक रौनक़ रब्वाह

के जलसा में होती थी। रब्वाह का जलसा प्रत्येक वर्ष दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में हुआ करता था अब बन्द हो चुका है क्योंकि इमाम जमाअते अहमदिय्या पाकिस्तान से लंडन चले गए हैं इस लिए अब यह जलसा जुलाई में लंडन में होता है। तथा कादियान का जलसा प्रत्येक वर्ष दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में होता है। इसके अतिरिक्त अमरीका, कैनेडा, जर्मनी, इन्डोनेशिया आदि कई देशों में सालाना जलसे होते हैं जिनमें हज़ारों लोग शामिल होते हैं।

रब्वाह :- क़ादियान से हिजरत के बाद सितम्बर 1948 में चिन्योट ज़िला झंग से छः मील की दूरी पर चनाब नदी के किनारे अहमदिय्या जमाअत का नया केन्द्र स्थापित हुआ जिसका नाम **रब्वाह** रखा गया। अहमदिय्या जमाअत के दूसरे उत्तराधिकारी हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो ने इसकी नींव रखी। जमाअत के सभी दफ़्तर स्कूल तथा कालिज यहां पर हैं। इस्लाम के प्रचारक विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में प्रचार के लिए यहीं से जाते हैं।

हज़रत अम्मां जान रज़ि अल्लाहो अन्हा, और जमाअत के दूसरे उत्तराधिकारी तथा तीसरे उत्तराधिकारी की कब्र भी **रब्वाह के बहिश्ती मक़बरा** में है। रब्वाह के कुछ महत्वपूर्ण स्थानों के नाम इस प्रकार हैं :-

मस्जिद मुबारक, मेहमान ख़ाना दारुज़्ज़ियाफ़त, बहिश्ती मक़बरा, दफ़्तर सदर अन्जुमन अहमदिय्या, तहरीक-ए-जदीद, वक्फ़-ए-जदीद, दफ़्तर फ़ज़ल-ए-उमर फ़ाऊण्डेशन, जामिया अहमदिय्या, तअलीम-उल-इस्लाम कालिज, तआलीम-उल-इस्लाम हाई स्कूल, जामिआ नुसरत, जामिआ नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल, फ़ज़ल-ए-उमर अस्पताल, दफ़्तर मजलिस अन्सारउल्लाह दफ़्तर ऐवान-ए-महमूद (हाल ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या) ख़िलाफ़त लाइब्रेरी, दफ़्तर लजना इमा उल्लाह, मस्जिद अक़सा।

समाचार पत्र :- जमाअते अहमदिय्या के सर्वप्रथम समाचार पत्र का नाम **"अलहकम"** था। यह समाचार पत्र 1897 में अमृतसर से निकलता था तथा तत्पश्चात 1898 में कादियान से निकलने लगा इसके सम्पादक हज़रत

शेख़ याकूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ि अल्लाहो अन्हो थे।

इस समय **"रब्वाह"** से जो समाचार पत्र पत्रिकाएं निकलती हैं उनके नाम इस प्रकार हैं :-

रोज़नामा अल्फ़ज़ल, पत्रिका अन्सारुल्लाह, पत्रिका अल फ़ुरक़ान, पत्रिका ख़ालिद, पत्रिका तशहीज़-उल-अज़हान, (यह पत्रिका अहमदी बालक व बालिकाओं के लिए प्रकाशित होती है) पत्रिका रिव्यू आफ़ रिलिज़न्ज़ (इंग्लिश), पत्रिका अल बुशरा (अरबी), मिस्बाह, अल्मीनार, **मजिल्लातुउल-जमेआ**, पत्रिका तहरीक-ए-जदीद।

रब्वाह तथा क़ादियान के अतिरिक्त इंगलैंड, अफ़्रीका, अमेरिका, सीलोन, सुइज़रलैंड तथा विश्व के बहुत से देशों से अहमदियों के समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं छपती हैं।

लंडन :- हमारे मौजूदा इमाम हज़रत मिर्जा ताहिर अहमद साहिब को जब पाकिस्तान के ताना शाह ज़ियाउल हक़ ने मजबूर करके रब्वाह से निकाल दिया तो आप हिजरत कर के 1984 ई. से लंडन में हैं लंडन में जमाअत अहमदिया ने सब से पहली मस्जिद 1924 ई. में मस्जिद फ़ज़ल के नाम से बनाई थी और जहां अब मस्जिद के साथ जमाअत के दफ़तर बनाए गए हैं हज़ूर यहीं रहते हैं। यहां पर जमाअत के जलसों के लिए महमूद हाल भी है मुस्लिम टैलीविज़न अहमदिया का दफ़तर भी यहीं पर है।

हज़ूर ने लंडन से दूर टिलफरड ज़िले में कई एकड़ रकबा ख़रीद कर अब एक़ बहुत बड़ा सैंटर बनाया हैं जहां जमाअत के दफ़तर मस्जिद प्रैस और लंगर ख़ाना बनाया गया है। हर साल ईंगलैंड का सालाना जलसा यहीं पर होता है।

इस समय लंडन से साप्ताहिक पत्रिका अलफ़ज़ल इन्टरनैश्नल, अंग्रज़ी में रेव्यू आफ़ रैलिज़न्ज़ और अरबी में अत्तक़वा पत्रिका निकलती है।

नौवां अध्याय
हज़रत मसीहे मौऊद की कुछ भविष्यावाणियां

अल्लाह तआला से सूचना पाकर हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत सी भविष्यवाणियां कीं जो अपने अपने समय पर पूरी हुईं । कुछ भविष्यवाणियां इस प्रकार हैं :-

मुसलेह मौऊद की भविष्यवाणी :- ख़ुदा ने हुज़ूर को बताया कि हुज़ूर के यहां नौ वर्ष के अन्दर एक पुत्र का जन्म होगा जो दुनियाँ के किनारों तक प्रसिद्धी पायेगा, इसके द्वारा इस्लाम बहुत उन्नति करेगा । वह क़ुर्आन शरीफ़ की शिक्षा को सारे विश्व में फैलाएगा तथा अहमदिय्या सम्प्रदाय को इसके द्वारा एक विशेष प्रकार की उन्नति मिलेगी ।

इस भविष्यवाणी का एक एक शब्द आश्चर्यजनक रंग से पूरा हुआ । अहमदिय्या सम्प्रदाय के दूसरे उत्तराधिकारी हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब इस भविष्यवाणी के अनुसार नौ वर्ष के अन्दर पैदा हुए तथा कड़ी विरोद्धता के होते हुए भी हुज़ूर जमाअत अहमदिय्या के द्वितीय उत्तराधिकारी ख़लीफ़ा नियुक्त हुए तथा आप के युग में इस्लाम तथा अहमदिय्या जमाअत ने बहुत उन्नति की तथा आज मित्र तथा शत्रु तथा अन्य सब मानते हैं कि हुज़ूर की प्रसिद्धी विश्व के किनारों तक फैली हुई है।

क़ादियान से हिजरत के सम्बन्ध में भविष्यवाणी :- ख़ुदा ने हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को **"दाग़े हिजरत"** की

भविष्यवाणी में बताया था कि हिजरत होगी तथा मुसलेह मौऊद रज़ि अल्लाहो अन्हो को सपने में दिखाया था कि किसी ज़माने में अहमदिय्यों को कादियान से जाना पड़ेगा तथा ऊँचे ख़ुश्क पर्वतीय क्षेत्र में उसे अपना दूसरा केन्द्र बनाना पड़ेगा तथा यह दशा थोड़े समय के लिए होगी। यह हिजरत 1947 में हो चुकी है। जमाअते अहमदिय्या पाकिस्तान में ऊँचे ख़ुश्क पर्वतीय क्षेत्र में बस गई तथा इस स्थान का नाम **"रब्वाह"** रखा गया।

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को इस सम्बन्ध में भविष्यवाणी यह भी हुई कि :-

قَدِ ابْتُلِیَ الْمُؤْمِنُوْنَ مَا هٰذَا اِلَّا تَهْدِيْدُ الْحُكَّامِ۔ اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ۔ اِنِّیْ مَعَ الْاَفْوَاجِ اٰتِيْكَ بَغْتَةً۔ يَأْتِيْكَ نُصْرَتِیْ اِنِّیْ اَنَا الرَّحْمٰنُ ذُو الْمَجْدِ وَالْعُلٰی۔

अनुवाद :- तुझ पर तथा तेरे साथ के मोमिनो पर हकूमत के लोगों की ओर से विपत्ता आएगी। यह विपत्ता थोड़े समय के लिए होगी। इस से अधिक नहीं। वह ख़ुदा जिसने क़ुरआन शरीफ़ की सेवा का कार्य तुझे सौंपा है वह तुझे कादियान में वापिस लाएगा मैं अपने फ़रिश्तों के द्वारा अचानक तेरी सहायता करूँगा तथा तुझे मेरी सहायता पहुंचेगी। मैं बहुत जलाल ऊँची शान वाला तथा बहुत दयावान हूं (तज़केराह सफ़ा 295)

इस से सपष्ट है कि हिजरत वाली घटना थोड़े समय के लिए है तथा जिस प्रकार हिजरत की भविष्यवाणी पूरी हुई है उसी प्रकार अपने समय पर वापसी की भविष्यवाणी भी अवश्य पूरी हो कर रहेगी।

दसवां अध्याय

जमाअते अहमदिय्या का निज़ाम

जमाअते अहमदिय्या को अच्छी तरह चलाने के लिए हमारे हज़रत साहिब ने

अलग-अलग विभाग और उनकी शाखाओं का प्रबन्ध किया है जिन में से कुछ विभागों और उनकी शाखाओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :-

सदरअन्जुमन अहमदिय्या :- सदर अन्जुमन अहमदिय्या जमाअत की सबसे बड़ी शाखा का नाम है इस की स्थापना हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने की।

1947के रोष के पश्चात भी सदर अन्जुमन अहमदिय्या कादियान उसी तरह कायम है और अपना कर्तव्य पूरी मेहनत इमानदारी, हिम्मत और तन मन से निभा रही है।

पाकिस्तान में अलग केन्द्र सदर अन्जुमन अहमदिय्या रब्वाह पाकिस्तान कायम है जमाअते अहमदिय्या के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह राबए अय्यदाहुल्लाह तआला की निगरानी और हिदायत के अनुसार पाकिस्तान में इस्लाहो इरशाद अहमदिय्यों की तालीम व तरबियत का इन्तेज़ाम करती है। परन्तु भारत में सभी जमाअतों की निगरानी और इस्लाम के प्रचार के कार्य का प्रबन्ध सदर अन्जुमन अहमदिय्या कादियान करती है जिस के अलग-अलग दफ़्तर हैं और इन सब दफ़्तरों के अलग-अलग नाज़िर निर्युक्त किए गए हैं और नाज़िर के अधीन अन्य कर्मचारी कार्य करते हैं जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बहुत अच्छे रंग में जमाअते अहमदिय्या की सेवा कर रहे हैं।

देश के विभाजन के पश्चात सदर अन्जुमन अहमदिय्या कादियान के पहले नाज़िर आला हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि अल्लाहो अन्हो नियुक्त हुए आप के पश्चात 5 मार्च 1948 को हज़रत मौलाना अब्दुर रहमान साहब फ़ाज़िल रज़ि अल्लाहो अन्हो नाज़िर आला बने और अपनी मृत्यु 21जनवरी1977 तक इस पदवी पर काम करते रहे आप की मृत्यु के पश्चात हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो के पुत्र हज़रत मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब सल्लमाहुल्लाह तआला

सदर अन्जुमन अहमदिय्या कादियान के नाज़िर आला बने और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपना कर्तव्य पूरी ज़िम्मेदारी के साथ निभा रहे हैं।

तहरीक-ए-जदीद अन्जुमन अहमदिय्या :- 1947 के रोश के पश्चात भी अन्जुमन तहरीक-ए-जदीद कादियान उसी तरह कायम है और अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी, मेहनत, हिम्मत और तम मन के साथ निभा रही है इस अन्जुमन की स्थापना जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो ने की।

पाकिस्तान में अलग "तहरीक-ए-जदीद अन्जुमन अहमदिय्या ख्वाह पाकिस्तान" कायम है जिस के सदर मजलिस ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो के पुत्र साहिब ज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब है। जमाअत अहमदिय्या के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदा हुल्लाह तआला की निगरानी और हिदायत के अनुसार दूसरे देशों में भारत को छोड़ कर इस्लाम के प्रचार का काम अन्जुगन तहरीक-ए-जदीद पाकिस्तान के ज़िम्मे हैं। प्रत्येक वर्ष एक विशेष चन्दा तहरीक-ए-जदीद के नाम से लिया जाता है फिर उस के द्वारा इस्लाम के मुबल्लिग़ (प्रचारक) तैयार किए जाते हैं जो अपना जीवन इस्लाम की सेवा के लिए वक्फ़ करते हैं और हुज़ूर के प्रत्येक आदेश का पालन करने का वचन देते हैं। यह दुनिया की सभी भाषाओं में क़ुर्आन मजीद का अनुवाद करवाती है और उसे छपवाती है। इस समय इस अन्जुमन के अधीन दुनिया के बहुत से देशों में इस्लाम के प्रचारक प्रचार का काम कर रहे हैं। जैसे अफ़्रीका, अमैरिका, इंग्लिस्तान, जर्मनी, सुइटज़रलैंड, स्पेन, हॉलैंड, इन्डोनेशिया, सिंगापुर, बोरनियों, बर्मा आदि इन देशों में प्रचार के साथ साथ मस्जिदें बनवाई जा रही हैं।

1947 से पहले जमाअते अहमदिय्या कादियान के द्वारा ख़िलाफ़ते सानिया के दौर में इस्लाम का नाम दुनिया के किनारों तक विशेष तौर पर फैला। बेशक 1947

के रोष के पश्चात हालात बदल गए अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि जहां पर पाकिस्तान के केन्द्र रब्वाह से पहले की भान्ति वाकफ़ीने ज़िन्दगी मुबश्शरीन दुनिया के अतराफ़ व अकनाफ़ में जा रहे हैं। और जमाअते अहमदिय्या दिन-ब-दिन तरक्की कर रही है भारत में भी सदर अन्जुमन अहमदिय्या की निगरानी में भारत के कोने कोने में इस्लाम का नाम ऊच रहा है और लोगों को सच्चे इस्लाम का निमन्त्रण दे रहे हैं कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कलकत्ता, बम्बई से साहिले माला बार तक अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदी मुबल्लिग़ (प्रचारक) प्रत्येक स्थान पर दीन का डंका बजा रहे हैं और दूसरे धर्म के लोगों को इस्लाम की ओर आने का निमन्त्रण दे रहे हैं।

वक्फ़-ए-जदीद अन्जुमन अहमदिय्या :- इस अन्जुमन की स्थापना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो ने 1958 ई. में की।

पाकिस्तान में अलग वक्फ़-ए-जदीद अन्जुमन अहमदिय्या रब्वाह के नाम से कायम है।

परन्तु भारत की सभी जमाअते अहमदिय्या की निगरानी, इस्लाम के प्रचार का काम ''वक्फ़-ए-जदीद अन्जुमन अहमदिय्या भारत'' के द्वारा होता है इस अन्जुमन के अधीन (मुअल्लमीन) के द्वारा प्रचार का कार्य, तरबियत के काम और उनकी शिक्षा का काम बहुत अच्छा हो रहा है जिस के परिणाम काफी अच्छे निकल रहे हैं।

पाकिस्तान में जमाअते अहमदिय्या के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़ात-उल-मसीह राबे अय्यदा हुल्लाह तआला की निगरानी और हिदायत के अनुसार गाँव के लोगों का सुधार, और इस्लाम की सच्चाई बताने और अहमदी लोगों की तरबिय्यत और उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है।

जमाअते अहमदिय्या की अन्दरूनी शाखायें

जमाअते अहमदिय्या के लोगों की अच्छी तरह तरबिय्यत करने के लिए अलग-अलग शाखायें हैं जिस का वर्णन इस प्रकार है :-

मजलिसे अनसारुल्लाह :- चालीस वर्ष से अधिक आयु के आदमियों की शाखा का नाम अनसारुल्लाह है। जो हर दो मराकज़ में जमाअत की तआलीम व तरबिय्यत और तबलीग़ का फ़र्ज़ सर अन्जाम देने के लिए अपने मातहत मुलकों की मजालिस की निगरानी कर रही है।

मजलिस ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या :- 1947 के रोष के पश्चात भारत में मजलिस ख़ुदनदाम-उल-अहमदिय्या उसी तरह कायम रही। ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या नवयुवकों की मजलिस है इस का प्रारम्भ जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़ीलाफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो ने किया था यह मजलिस अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी और परिश्रम के साथ निभा रही है।

पाकिस्तान में अलग से मजलिस ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या मरकज़िय्या रब्वाह पाकिस्तान कायम है।

देश के विभाजन के समय हालात ख़राब होने के कारण भारत में इस मजलिस के कार्यों में थोड़े समय के लिए रुकावट आ गई थी परन्तु देश के विभाजन के पश्चात ही मजलिस ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या के कार्य उसी प्रकार आरम्भ हो गए। अब यह मजलिस बहुत शानदार रंग में अपना कर्तव्य निभा रही है। यह मजलिस अहमदी नवयुवकों की तरबिय्यत करती है।

ग़रीब और मजबूर लोगों की सहायता करती है चाहे वह किसी जाति या धर्म से सम्बन्ध रखते हों इन लोगों की सहायता करना इस मजलिस के कार्यक्रम में शामिल है।

अतफ़ाल-उल-अहमदिय्या :- अहमदी बचों की शाख़ा का नाम अतफ़ाल-उल-अहमदिय्या है। यह मजलिस ख़ुद्दाम-उल-अहमदिय्या के अधीन कार्य करती है।

लजनाह इमाउल्लाह :- यह अहमदी औरतों की अन्जुमन का नाम है जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो ने 1922 ई. में इस अन्जुमन की स्थापना की।

यह अन्जुमन अहमदी औरतों की शिक्षा और उनकी तरबिय्यत का प्रबन्ध करती है वर्ष में एक बार इस का सालाना इज्तेमा रब्वाह में होता है कादियान में भी लजनाह इमाउल्लाह केन्द्र का सालाना इज्तेमा मनाया जाता है।

रब्वाह में सबसे पहले इसी अन्जुमन का हाल बनाया गया था।

नासरातुल-अहमदिय्या :- अहमदी बच्चियों की शाख़ा का नाम नासरातुल-अहमदिय्या है। यह लजना इमाउल्लाह की निगरानी और हिदायत के अधीन बच्चियों की तरबिय्यत करने और उनमें नेक आदतें पैदा करने की कोशिश करती है।

बच्चियों के जलसे किए जाते हैं जिन में तकरीर नज़्म और दीनी मालूमात (धार्मिक ज्ञान) के मुकाबले करवाए जाते हैं। फिर बच्चियों की परिक्षा ली जाती है और उन में जो सबसे अच्छे अंक प्राप्त करती हैं उन्हें पुरस्कार दिए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष लजना इमाउल्लाह के सालाना इज्तेमा के अवसर पर नासरातुल-अहमदिय्या का भी सालाना इज्तेमा करवाया जाता है।

शिक्षित विभाग और मदद करने वाली संस्थाएँ :- इस समय रब्वाह में कई शिक्षित विभाग और सहायता करने वाले दफ़्तर हैं कुछ दफ़्तरों के नाम यह हैं।

(1) जामिआ अहमदिय्या :- इस इदारे में इस्लाम के प्रचारक (मुबल्लिग़) तैयार होते हैं जो दीनी तालीम प्राप्त कर के पाकिस्तान और अन्य देशों

में प्रचार का काम कर रहे हैं। जामिआ अहमदिय्या अन्जुमन तहरीके जदीद के अधीन है।

(2) तआलीम -उल-इस्लाम डिगरी कॉलिज।

(3) तआलीम-उल-इस्लाम हाई स्कूल।

(4) जामिआ नुसरत।

(5) नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल।

कुछ वर्षों पहले पाकिस्तान सरकार की नई योजना के अधीन देश के दूसरे शिक्षित विभागों की तरह सदर अन्जुमन अहमदिय्या के यह दफ़्तर भी सरकार ने अपने अधीन कर लिए हैं।

(6) फ़ज़ल-ए-ऊमर जूनियर मॉडल स्कूल।

(7) सनअती स्कूल।

यह दोनों दफ़्तर लजनाह इमाउल्लाह मरकज़िय्या के अधीन चल रहे हैं।

(8) फ़ज़ल-ए-ऊमर अस्पताल।

(9) दारुल यतामा।

यहां पर जमाअत के अनाथ बच्चों का पालन पोषण होता है।

ग्यारहवां अध्याय

जमाअते अहमदिय्या से सम्बन्ध रखने वाली महत्वपूर्ण तारीखें

✻हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम का जन्म।

13 फ़रवरी 1835 ई०.

✻ मस्जिद अक़सा का निर्माण।

1876 ई०.

✻ **(मामूरियत) मसीहे मौऊद व मेहदी मौऊद के बारे में पहली भविष्यवाणी।**

मार्च 1882 ई०.

✲ जमाअते अहमदिय्या में बैअत की शुरुआत लुधियाना में।

23 मार्च 1889 ई०.

✲ दूसरे ख़लीफ़ा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब का जन्म।

12 जनवरी 1889 ई०.

✲ पहला जलसा सालाना।

दिसम्बर 1891 ई०.

✲ तआलीम-उल-इस्लाम हाई स्कूल की शुरुआत।

1898 ई०.

✲ मीनारातुल-मसीह की नींव।

मार्च 1903 ई०.

✲ मदरस्सा अहमदिय्या की नींव।

1906 ई०.

✲ हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम का देहान्त लाहौर में हुआ।

26 मई 1908 ई०.

✲ जमाअते अहमदिय्या में ख़िलाफ़त की शुरुआत।

27 मई 1908 ई०.

✲ समाचार पत्र अल्फ़ज़ल की शुरुआत।

19 जून 1913 ई०.

✲ पहले ख़लीफ़ा हज़रत हाफ़िज़ हाजी हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब का देहान्त।

13 मार्च 1914 ई०.

✲ दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह सानी रज़ि अल्लाहो अन्हो का चुनाव।

14 मार्च 1914 ई०.

❋ मजलिस मशावरात की स्थापना।

1922 ई०.

❋ दूसरे ख़लीफ़ा की पहली यूरोप यात्रा।

1924 ई०.

❋ ख़ुददाम-उल-अहमदिय्या की शुरुआत।

1938 ई०.

❋ लजना की स्थापना।

1922 ई०.

❋ ख़िलाफ़त जोबली।

1939 ई०.

❋ अन्सार उल्लाह की शुरुआत।

1940 ई०.

❋ क़ादियान से हिजरत।

1947 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ा सानी की दूसरी यूरोप यात्रा।

1955 ई०.

❋ जमाअते अहमदिय्या के नए केन्द्र रब्वाह की नींव।

20 सितम्बर 1948 ई०.

❋ हज़रत ख़पीफ़ा सानी का देहान्त।

8 नवम्बर 1965 ई० सोमवार के दिन।

❋ तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़ा सालिस रहमुल्लाह तआला का जन्म।

16 नवम्बर 1909 ई०.

❋ तीसरे ख़लीफ़ा का चुनाव।

8 नवम्बर 1965 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ात-उल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो तआला की यूरोप की यात्रा।

6 जुलाई से 24 अगस्त 1967 ई०.

✻ मस्जिद नुसरत जहाँ कोपन हैगन (डैनमार्क) का उदघाटन।

21 जुलाई 1967 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस का तारीख़ी दौरा पश्चिमी अफ़्रीका में

4 अप्रैल 1970 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो ताआला ने ख़िलाफ़त लाइब्रेरी का उदघाटन किया।

13 अक्तूबर 1971 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सालिस ने रब्वाह में मस्जिदे अक़सा की भव्य इमारत का उदघाटन किया।

31 मार्च 1972 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो तआला ने रब्वाह में जदीद प्रैस की इमारत का नींव पंत्थर रखा।

18 फ़रवरी 1973 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो तआला का यूरोप के देश हॉलैंड, सविटज़र लैंड, जर्मनी, डैनमार्क, और इंग्लिस्तान आदि का दौरा।

13 जुलाई से 26 सितम्बर 1973 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो तआला की यूरोप की यात्रा।

15 अगस्त से 29 अक्तूबर1975 ई०.

✻ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमुल्लाहो तआला ने यूरोप की यात्रा के दौरान गोटन बरग सवीडन के स्थान पर पहली बार मस्जिद का नींव पत्थर रखा।

27 सितम्बर 1975 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल मसीह सालिस ने सदर अंजुमन अहमदिय्या की निगरानी में बनाए जाने वाले गैस्ट हाऊस का उदघाटन किया।

4 मार्च 1976 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला का अमेरीका, कैनेडा और यूरोप का तारीख़ी दौरा।

30 जुलाई से 20 अक्तूबर 1976 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला ने यूरोप की यात्रा के दौरान में गोटन बरग में ''मस्जिद नासिर'' का उदघाटन किया।

25 अगस्त 1976 ई०.

❋ लन्दन में अन्तर्राष्ट्रीय कसरे सलीब कान्फ़्रैन्स की।

2 से 4 जून 1978 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला ने 700 वर्ष पश्चात स्पेन में **''मस्जिदे बशारत''** का नींव पत्थर रखा।

9 अक्तूबर 1980 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला की मृत्यु।

8/9 जून 1982.

❋ हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदहुल्लाहो तआला का चुनाव।

10 जून 1982 ई०.

❋ चौथे ख़लीफ़ा का जन्म।

18 दिसम्बर 1928 ई०.

❋ चौथे ख़लीफ़ा ने मस्जिदे बशारत पैडरो आबाद स्पेन का उद्घाटन किया।

10 सितम्बर 1982 ई०.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदहुल्लाहो तआला का पूर्वी देशों का

दौरा।

8 सितम्बर से 13 अक्तूबर 1983 ई.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदहुल्लाहो तआला ने पहली बार आस्ट्रेलिया में अहमदिय्या मस्जिद **"अलमस्जिद बैअतुल हुदा"** का नींव पत्थर रखा।

30 सितम्बर 1983 ई.

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदहुल्लाहो तआला की हिजरते लन्दन।

30 अप्रैल 1984 ई. दिन सोमवार।

❋ हज़रत ख़लीफ़ातुल-मसीह राबेह अय्यदहुल्लाहो तआला ने पहली बार कैनेडा में अहमदिय्या मस्जिद का नींव पत्थर रखा।

20 सितम्बर 1986 ई.

❋ सय्यदना बिलाल फंड (1986) इस के द्वारा जमाअत के वह लोग जिन को पाकिस्तान में या कहीं और अत्याचार से कैद किया गया या शहीद किया गया उन के परिवारों का ख़्याल रखा जाता है।

❋ तहरीक वक़्फ़े नौ (3 अप्रैल 1987 ई.) इस स्कीम के तहत अहमदी पैदा होने से पहले अपने बच्चों को ख़ुदा की राह में वक़्फ़ करते हैं।

❋ एम. टी. ए. का आरम्भ (7 जनवरी 1994 ई.)

❋ रूसी रियास्तों में वक्फ़ की तहरीक (2 अक्तूबर 1992 ई.)

❋ बोस्निया के मुसलमानों की मदद की तहरीक (30 अक्तूबर 1992 ई.)

❋ आलमी बैअत (12 फरवरी 1994 ई.)

बारहवां अध्याय

कुर्आने शरीफ़ की अनिवार्य शिक्षा

(1) अल्लाह एक है ! केवल उसी की इबादत करो और उसी से

सहायता मांगो।

(2) अल्लाह तआला और उसके नबियों के सब आदेशों का पालन करो।

(3) माता पिता की आज्ञा का पालन करो और उनका कहना मानो।

(4) ख़ुदा से अपनी ग़लतियों व कसूरों की माफ़ी माँगो।

(5) मुसीबत तथा कष्ट के समय संयम रखो।

(6) जब वायदा करो ज़रूर उसे पूरा करो।

(7) सब मुसलमान भाई-भाई हैं किसी को अपने से छोटा मत समझो।

(8) आपस में लड़ाई मत करो मेल मिलाप से रहो।

(9) ख़ुदा की नेअमतों (वरदानों) का शुकर करो।

(10) इस्लाम का पैग़ाम सारी दुनिया में पहुँचाओ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान :-

(1) प्रात: काल उठा करो क्योंकि इसका बड़ा पुण्य है।

(2) अल्लाह तआला जिस व्यक्ति को बेइज़्ज़त करना चाहता है उसे इल्म (ज्ञान) से वन्चित कर देता है।

(3) जिन से तुमने शिक्षा प्राप्त की उनका सम्मान करो।

(4) माता पिता की अवज्ञा करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

(5) मां के कदमों के नीचे जन्नत (स्वर्ग) होती है।

(6) बड़ा भाई बाप की जगह होता है।

(7) बात करने से पहले एक दूसरे को सलाम ज़रूर किया करो।

(8) जब भी खाना खाने लगो बिस्मिल्लाह पढ़ लिया करो।

(9) जिनसे बाएं हाथ से खाया उसके साथ शैतान ने खाया।

(10) अगर रास्ता में तकलीफ़ (कष्ट) देने वाली कोई चीज़ पड़ी हो तो उसे हटा दिया करो।

(11) किसी जानवर को भी दुख न दो।

(12) सच निजात देता है झूठ हलाक करता है।

(13) अपनी ग़ल्ती को मानने से इंकार मत करो।

(14) हर समय साफ़ और पवित्र रहो क्योंकि इस्लाम एक पवित्र मज़हब है।

हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा

(1) यह ख़्याल मत करो कि हमने ज़ाहरी बैअत कर ली है दिखावा कोई चीज़ नहीं। ख़ुदा तुम्हारे दिलों को देखता है तथा उसी के अनुसार तुम्हारा फैसला करेगा।

(2) पाप एक विष है, इसे मत खाओ। ख़ुदा की अवज्ञा एक गन्दी मौत है उस से बचो।

(3) जो व्यक्ति झूठ और धोखे को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

(4) जो व्यक्ति पांचों नमाज़ें नियमित रूप से नहीं पढ़ता, वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

(5) जो व्यक्ति अपने माता पिता का आदर नहीं करता तथा उनकी सेवा से लापरवाह है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

अहमदिय्या जमाअत के दूसरे ख़लीफ़ा की आवश्यक हिदायतें

नमाज़ को कभी मत छोड़ो :- जो व्यक्ति नमाज़ छोड़ता है मैं उसे विश्वास दिलाता हूँ कि उसे ईमान की मौत प्राप्त नहीं होगी। नमाज़ को छोड़ना कोई साधारण बात नहीं। जो लोग कभी नमाज़ पढ़ते हैं कभी नहीं पढ़ते हैं वो लोग रस्म और दिखावे के लिए नमाज़ पढ़ते हैं।

मानवता की हमदर्दी अपने दिलों में पैदा करो :- 'मैंआकाश पर ख़ुदा तआला की उंगली को अहमदियत की विजय की ख़ुशख़बरी लिखते हुए देखता हूँ। जो फैसला आकाश पर हो धरती उसे रद् नहीं कर सकती तथा ख़ुदा के हुकुम को मनुष्य बदल नहीं सकता सो तसल्ली पाओ तथा प्रसन्न हो जाओ और दुआओं, रोज़ों (वर्त) एवं विनम्रता पर बल दो तथा

मानवता की हमदर्दी अपने दिलों में पैदा करो।" *(सन्देश जलसा सालाना कादियान 1947)*

तेहरवां अध्याय

इस्लाम धर्म की सबसे बड़ी विशेषता

इस्लाम का अर्थ उस नियम तथा उस मार्ग के हैं जिस पर चल कर हम ख़ुदा तक पहुँच सकें। अर्थात् वह ख़ुदा जो हमारा जन्मदाता है उसे प्रसन्न करे लें और उसे मित्र तथा सहायक बना लें।

इसका तो आप लोगों को पता ही होगा कि इस संसार में बहुत सारे धर्म मौजूद हैं जैसे इसाई धर्म, हिन्दू धर्म, यहूदी धर्म, बौध धर्म आदि यह सारे धर्म ही ख़ुदा तक पहुँचाने का दावा करते हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि हमने इन धर्मों को क्यों स्वीकार नहीं किया और इस्लाम को सच्चा धर्म क्यों समझते हैं।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि निसन्देह यूँ तो सारे धर्म ही सच्चे हैं इन्सान को ख़ुदा तक पहुँचाने का दावा करते हैं परन्तु इन्सान को ख़ुदा के साथ सम्बन्ध रखने का विश्वासी होने तथा सच्चाई का प्रमाण केवल इस्लाम में ही नज़र आता है।

अन्य धर्म वाले निसन्देह यह दावा करते हैं कि हमारा धर्म ही सबसे अच्छा है तथा हमारा धर्म ही ख़ुदा से सम्बन्ध बना सकता है और साथ में वह यह भी कहते हैं पहले युगों में ख़ुदा अपने बन्दों से बातें करता था उनके लिए बहुत से निशान और चमत्कार दिखाता था परन्तु अब उसने अपने बन्दों से बातें करना और उनकी बातों का जवाब देना बंद कर दिया है उस के मुकाबले में इस्लाम यह कहता है कि जैसे पहले ख़ुदा अपने बन्दों से बातें करता था उसी तरह अब भी करता है उनकी दुआओं को सुनता है उनके लिए अपने निशान और चमत्कार दिखाता है।

इस युग में जमाअते अहमदिय्या के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीहे मौऊद व मेहदी मअहूद अलैहिस्सलाम ने विशेष रूप में इस्लाम की विशेषता को विश्व के सामने प्रस्तुत किया है। आप ने कहा :-

"ऐ सुनने वालो ! हमारा वह ख़ुदा है जो अब भी ज़िन्दा है जैसे वह पहले ज़िन्दा था। वह अब भी बोलता है जैसे वह पहले बोलता था। अब भी सुनता है जैसे कि पहले सुनता था। यह ख़्याल ग़लत है कि इस युग में वह सुनता तो है मगर बोलता नहीं वह सुनता भी है और बोलता भी है"

यह बात अच्छी तरह याद रखो ! इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता जिस के कारण हमने उसे स्वीकार किया है वह यह है कि वह एक जीवित ख़ुदा को प्रस्तुत करता है जो पहले की तरह बोलता, सुनता है अपने बन्दों की दुआओं का जवाब भी देता है तथा अपने बन्दों के लिए अपने निशान और चमत्कार दिखाता है। इस युग में हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके ख़लीफ़ों के द्वारा उसने हज़ारों निशान और चमत्कार दिखाए। यही नहीं बल्कि आज भी जो मुसलमान सच्चे दिल से अपनी इस्लाह करने की कोशिश करेगा और ख़ुदा से दुआयें करेगा ख़ुदा उसकी दुआओं को ज़रूर सुनेगा और उसके लिए अपने निशान दिखाएगा।

अहमदी बच्चो ! हर एक को यह कोशिश करनी चाहिए कि वह अपने ख़ुदा से सम्बन्ध रखे ज़्यादा से ज़्यादा दुआयें करो। अपनी हर ज़रूरत की इच्छा केवल ख़ुदा से ही करो अगर तुम ऐसा करोगे तो ख़ुदा तुम्हारी दुआओं को ज़रूर सुनेगा तुम्हारी दुआओं का जवाब देगा और तुम्हारे कारण अपने निशान और चमत्कार दिखाएगा।

चौहदवां अध्याय
अहमदी बच्चों का मक़ाम

अहमदी बच्चो ! क्या तुमने कभी सोचा है कि तुम्हारा पद और मुक़ाम क्या है ?

तुम मुसलमान बच्चे हो । अर्थात तुम इस्लाम को मानने वाले और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत हो । इस्लाम दुनियां के सब धर्मों से अच्छा, ऊँचा और अच्छा धर्म है । और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सबसे बड़े और उच्च नबी हैं । सबसे अच्छे धर्म को मानने और सबसे अच्छे नबी की उम्मत होने के कारण यह ज़रूरी है कि तुम्हारे काम और व्यवहार दुनिया के दूसरे बच्चों से अच्छे और बढ़िया होने चाहिए । फिर केवल तुम मुसलमान बच्चे ही नहीं बल्कि अहमदी मुसलमान बच्चे हो । अहमदी होने का अर्थ है कि तुम्हारा यह दावा है कि तुम दूसरे मुसलमान बच्चों से ज़्यादा इस्लाम के आदेशों को मानने वाले और उनका पालन करने वाले हो । इसी कारण तुम्हारा पद और मुक़ाम ज़्यादा ऊँचा और नाज़ुक (कोमल) है ।

हज़रत इमाम अबु हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहे मुसलमानों के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग और आलिम थे । आप एक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे जहां पर बहुत कीचड़ था आप ने देखा कि एक लड़का लापरवाही के साथ कीचड़ में से गुज़र रहा है आप ने कहा :-

बेटा ! देखो बहुत कीचड़ है, ज़रा संभल कर चलो ऐसा न हो आप का पैर फिसल जाए और आप गिर जायें ।

बच्चे ने जवाब दिया :- हज़रत ! बहुत अच्छा मैं संभल कर चलूंगा । लेकिन आप को मुझ से भी ज़्यादा संभल कर चलना चाहिए । अगर मैं गिर गया तो मेरा नुकसान होगा । लेकिन अगर आप गिर गए तो सारी उम्मत और जाति के गिरने का ख़तरा है ।

बच्चे के संक्षेप उत्तर में इस बात की ओर इशारा था कि जिस व्यक्ति का मुक़ाम और दर्जा ऊँचा हो अगर वह कोई ग़ल्ती कर बैठे तो उसका नुकसान भी ज़्यादा होता है ।

हम हर अहमदी बच्चे को कहते हैं कि प्यारे बच्चो ! तुम्हारी जगह और मुकाम दुनिया के दूसरे बच्चों से बहुत ऊँचा है । ख़ुदा न करे तुमने कोई बुरा काम किया या तुम में कोई कमज़ोरी पाई गई तो तुम्हारा ही नुकसान नहीं होगा बल्कि इस्लाम भी बदनाम होगा और अहमदिय्यत बदनाम होगी और लोग कहेंगे :- देखो उसने एक मुसलमान और अहमदी बच्चा हो कर यह बुरा काम किया है ।

इस्लाम और अहमदिय्यत के बच्चो :- अपने इस मुक़ाम को हमेशा सामने रखो । कोई ऐसा काम मत करो जो इस्लाम और अहमदिय्यत के विरुद्ध हो । हमेशा ऐसा व्यवहार करो जिस से इस्लाम की शान बढ़े । और लोग तुम्हारी प्रशंसा करें । हर अहमदी बच्चे को चाहिए कि वह जमाअते अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा के इन शब्दों में एहद करें कि "मैं आइन्दा यही समझूँगा कि अहमदिय्यत का स्तून मैं हूँ अगर मैं ज़रा हिला और मेरे कदम डगमगाए तो मैं समझूँगा कि अहमदिय्यत पर चोट आ गई"।

पन्द्रहवाँ अध्याय

इस्लाम की सफ़लता की ख़ुशख़बरी

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को ऐसे युग में भेजा जब इस्लाम पर बहुत से हमले हो रहे थे । सभी धर्म इस्लाम को मिटाने का इरादा कर चुके थे वे मुसलमान जिनकी किसी समय में बहुत शान थी, अब हर स्थान पर उनहें पराजय का मुँह देखना पड़ रहा था ।

यही कारण है कि मुसलमानों में बहुत सी बुराइयां और कमज़ोरियां आ

गईं थीं ऐसे नाज़ुक युग में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा । आपने दुनियां में आकर सभी इस्लाम विरोधियों पर सबूतों और चमत्कारों के द्वारा इस्लाम की सच्चाई को दिखाया और उनकी विरोधता का उत्तर दिया । आपने उन्हें ललकारा कि आओ और इस्लाम के मुक़ाबले में अपने धर्म की सच्चाई को सिद्ध करो । आपने लाखों रुपये के इनाम रखे और यह घोषणा की कि जो व्यक्ति इस्लाम की सच्चाई को तोड़ेगा उसे मैं इनाम दूँगा परन्तु बार बार की चुनौती के बावजूद कोई भी आपके मुकाबले में नहीं आया । एक ओर तो आपने इस्लाम के विरोधियों का मुकाबला किया और दूसरी ओर आपने मुसलमानों की कमज़ोरियों और बुराइयों को दूर किया और आपने अल्लाह तआला के हुक्म से यह प्रसन्नचित सूचना दी कि :- "इस्लाम की सफ़लता को इन चढ़ाईयों से कुछ भी डर नहीं है । इसकी कामयाबी के दिन नज़दीक हैं और मैं देखता हूँ कि आसमान पर इसकी विजय के निशान ज़ाहिर हो गए हैं"। (आईनाए कमालाते-इस्लाम)

यह सूचना अल्लाह तआला की कृपा से धीरे-धीरे पूरी हो रही है । हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के बताये हुए सबूतों को लेकर जब अहमदी मुबल्लिग़ दुनिया के अलग-अलग देशों में गए तो हर जगह इस्लाम की विजय होने लगी । और नेक लोग मुसलमान होने लगे । पहले यह हालत थी कि मुसलमान हर जगह पर पराजित हो रहे थे । आज यह हालत हो गई है कि इस्लाम के बड़े-बड़े शत्रुओं ने भी यह मान लिया है कि अहमदी मुबल्लिगों के द्वारा हर जगह पर इस्लाम फ़ैल रहा है और इस्लाम उन्नति कर रहा है तथा स्वयं मुसलमान अनुभव करने लगे हैं कि उनकी कमज़ोरियाँ दूर हो रही हैं ।

अहमदी बच्चो ! तुम्हें यह विश्वास रखना चाहिए कि इस्लाम ज़रूर सफ़लता प्राप्त करेगा । तुम्हें चाहिए कि अभी से अपने दिल में इरादा और दृढ़ निश्चय कर लो कि बड़े होकर हम भी इस्लाम की सेवा करेंगे और

इस्लाम की उन्नति में भाग लेंगे। हमारे हज़रत साहिब इस्लाम के लिए जिस क़ुर्बानी के लिए भी हुक्म देंगे उसको हम ज़रूर पूरा करेंगे। इन्शा अल्लाह !

कादियान वालों के नाम पैग़ाम

हज़रत सय्यदा नवाब मुबारका बेग़म साहिबा रज़िअल्लाहो अन्हा

ख़ुशा नसीब के तुम कादियाँ में रहते हो
दयारे मेहदीए आख़िर ज़माँ में रहते हो

क़दम मसीह के जिसे बना चुके हैं हरम
तुम उस ज़मीने करामत निशां में रहते हो

ख़ुदा ने बख़्शी है अद्दरार की निगेहबानी
उसी के हिफ़्ज़ उसी की अमां में रहते हो

फ़रिश्ते नाज़ करें जिस की पहरादारी पर
हम उससे दूर हैं तुम उस मकां में रहते हो

फ़िज़ा है जिसकी मुअत्तर नफ़ूसे ईसा से
उसी मुक़ामे फ़लक आस्तां में रहते हो

न क्यों दिलों को सकूनो सुरूर हो हासिल
कि कुरबए खित्तए रश्के जनां में रहते हो

तुम्हें सलामो दुआ है नसीब सुबहो मसा
जवारे मरक़दे शाहे ज़मां में रहते हो

शबे जहां कि शबे कदर और दिन ईदें
जो हम से छूट गया उस जहाँ में रहते हो

कुछ ऐसे गुल हैं जो पज़मुर्दा हैं जुदा होकर
उन्हें भी याद रखो ''गुलसिताँ'' में रहते हो

तुम्हारे दम से हमारे घरों की आबादी
तुम्हारी क़ैद पे सदके हज़ार आज़ादी

''बुलबुल हूँ सहने बाग़ से दूर और शकिस्ता पर
परवाना हूँ चिराग़ से दूर और शकिस्ता पर''

नासरातुल-अहमदिय्या का अहद

अहमदी बच्चियों का वचन

मैं इक़रार (वादा) करती हूँ कि अपने मज़हम, कौम और वतन की ख़िदमत के लिए हर वक्त तैयार रहूँगी और सच्चाई पर हमेशा कायम रहूँगी। (इन्शाअल्लाह)

अतफ़ालुल अहमदिय्या का अहद

अहमदी बच्चों का वचन

मैं वाअदा करता हूँ कि दीने इस्लाम और अहमदिय्यत, क़ौम और वतन की ख़िदमत के लिए हर दम तैयर रहूँगा। हमेशा सच बोलूँगा किसी को गाली नहीं दूँगा और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की तमाम नसीहतों पर अमल करने की कोशिश करता रहूँगा। (इन्शाअल्लाह)

RAHE IMAN

by
SHEKH KHURSHEED AHMAD SAHEB

Hindi Translation by
SYED AMIR ALI

1st Edition December 1997
Copies :2000
2nd Edition October 2000
Copies :2000
3rd Edition April 2004
Copies :2000

Published by
NAZARAT NASHR-O-ISHAAT
Sadr Anjuman Ahmadiyya
QADIAN -143516
Distt Gurdaspur Pb.

Printed by:
Fazle Umar Offset Printing Press, Qadian